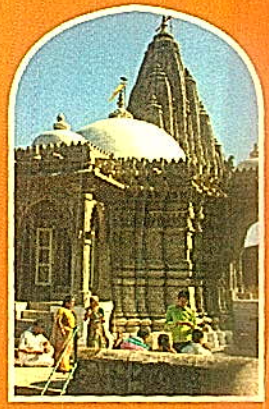

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 7 ISSUE : 6 MUMBAI, DECEMBER 2016 PAGES : 40 PRICE : ₹25

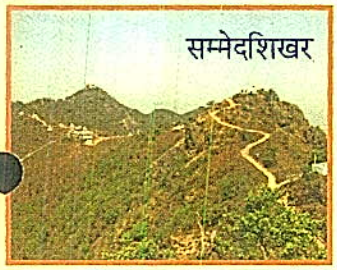

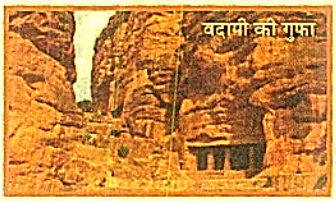

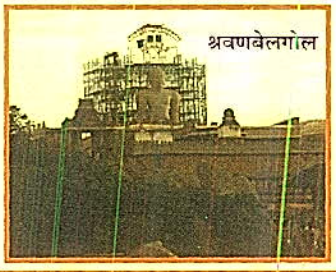

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

स्तवननिधि क्षेत्र, कर्नाटक

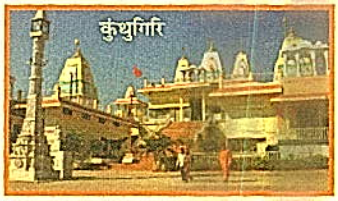

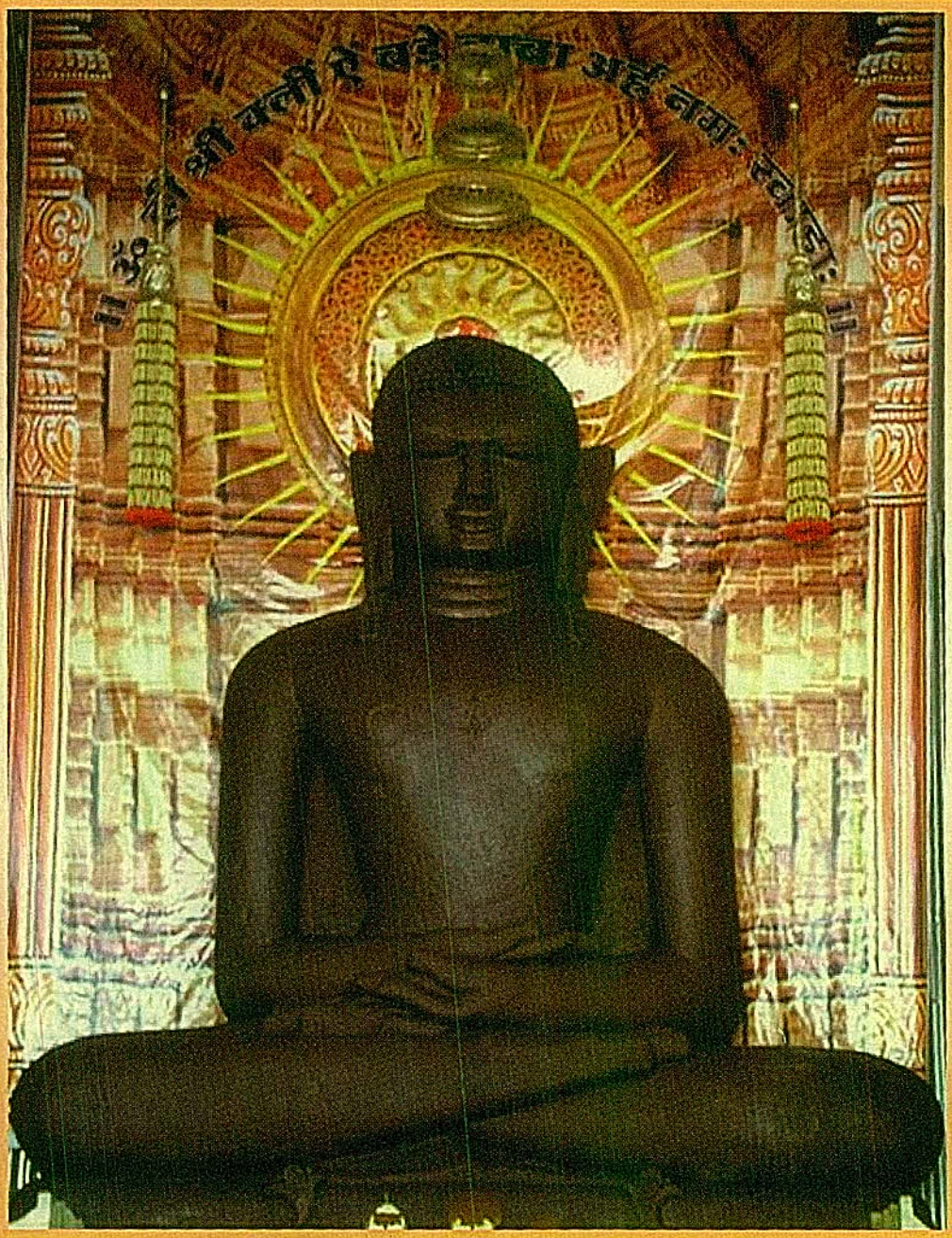

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

तीर्थवन्दना और महामस्तकाभिषेक
एक अपूर्व अवसर

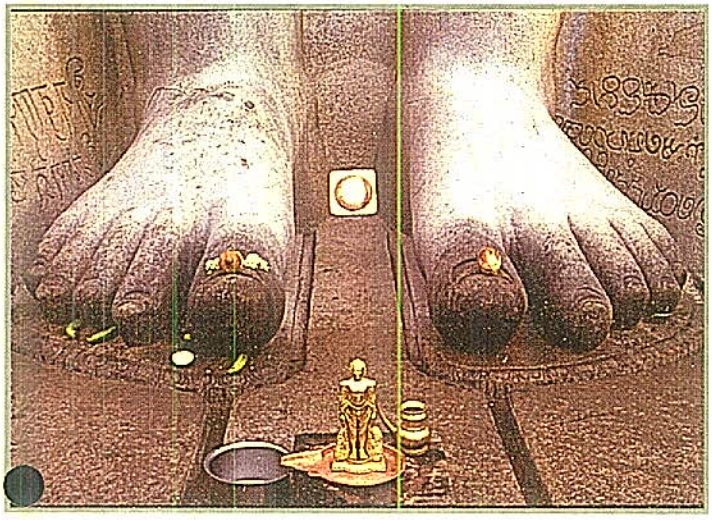

विगत माह में मैंने हमारे जीवन्त तीर्थ, श्रमण संस्कृति के चलते-फिरते तीर्थ दिगम्बर मुनिराजों के विहार में सहभागी होने की अपील की थी। वर्ष २०१६ का अंतिम माह दिसम्बर प्रारम्भ है, यह पत्रिका आपके हाथों में पहुँचेगी तब तक १५-२० दिन इस माह के पूर्ण हो चुके होगें। हमारी युवा पीढ़ी ही क्या सभी लोग ३१ दिसम्बर को मनाने हेतु आतुर दिखाई देते हैं, दिसम्बर आखिर में छुट्टियों का समय व मौसम की अनुकूलता घूमने व पर्यटन के लिए अनुकूल होती है। मैं निवेदन करना चाहती हूँ कि हम अपना समय संस्कृति के संरक्षण में लगाएं, आज सम्पूर्ण भारतवर्ष हमारी श्रमण संस्कृति के इतिहास से भरा पड़ा है। हमारी श्रेष्ठ संस्कृति का इतिहास पुरातत्व के माध्यम से देखा जा सकता है। इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करें तो हम पढ़ते हैं कि एक समय था जब केवल श्रमण संस्कृति ही इस भारतभूमि पर विद्यमान थी। आज अवसर है हम पर्यटन पर जाएं लेकिन उसे धार्मिकता से भी जोड़ें, हमारे बच्चों को उस सर्वसुलभ श्रमण संस्कृति के दर्शन कराकर उसकी प्राचीनता प्रमाणिकता के सन्दर्भ में चर्चा करें।

वर्ष का अन्त हम तीर्थ भूमि पर तीर्थवन्दना के साथ करें। अंग्रेजी नववर्ष का शुभारम्भ सिद्धभूमि, अतिशय क्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र पर तीर्थंकर प्रभु के अभिषेक के साथ करें। आनंद के साथ धार्मिक आध्यात्मिक आनंद भी प्राप्त हो तो हमारे कर्तव्य भी पूरे होते हैं। आज हम तीर्थों के प्रति अपने कर्तव्य को निभाएंगे तो आने वाली पीढ़ी उनका गौरव करेगी। अतः मैं निवेदन करना चाहूँगी कि हम घूमें लेकिन संस्कृति को न भूलें।

वर्ष २०१६ के समाप्ति के बाद अब श्रवणबेलगोला के अन्तर्राष्ट्रीय महामहोत्सव के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है। फरवरी-२०१८ की तारीखें भी परम पूज्य चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामीजी ने घोषित कर दी है। भगवान बाहुबलीजी की महान तपस्या का प्रतीक श्रवण बेलगोला की अद्भुत प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक

महामहोत्सव का उद्घाटन ७ फरवरी २०१८ को भव्यता के साथ होगा। हमारे श्रमण संस्कृति के उन्नायक आचार्य प्रवर, उपाध्याय, मुनिराज, आर्यिका माताजी, ऐलकजी, क्षुल्लकजी, त्यागीवृन्द बड़ी संख्या में श्रवणबेलगोला की ओर पद विहार कर रहे है, जो इस महोत्सव को अपने त्याग-तपस्या की महक से सुरभित करेगें। ८ फरवरी से १८ फरवरी २०१८ तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होगा और बहुप्रतीक्षित महा मस्तकाभिषेक १७ फरवरी २०१८ से प्रारम्भ होगा। मैं आपसे आग्रह कर रही हूँ मेरे पास जिन जिम्मेदारियों के निर्वहन का उत्तरदायित्व है उनमें तीर्थक्षेत्र कमेटी और महामस्तकाभिषेक महोत्सव। इन दोनों जिम्मेदारियों के साथ सम्पूर्ण देश में पद विहार कर रहे हमारे चतुर्विध संघ का आशीर्वाद हमारे साथ है। पूज्य भट्टारकजी की सोच व कार्यशैली सभी में अभूतपूर्व उत्साह का संचार करती है। उपाधियाँ उनके आगे बौनी लगती हैं। उनके मुख मण्डल की आभा हमें निरंतर ऊर्जा प्रदान करती है। ऐसे में यह आयोजन सम्पूर्ण देश में जैनत्व के प्रचार का श्रमण संस्कृति के संवर्धन का अनुपम आयोजन होगा। हम सभी इस आयोजन से जुड़ें क्योंकि -

महामस्तकाभिषेक - जैनत्व का गौरव है।

महामस्तकाभिषेक - अहिंसा का सन्देशवाहक है

महामस्तकाभिषेक - श्रमण संस्कृति का परिचायक है

महामस्तकाभिषेक - त्याग का अनूठा पर्व है

महामस्तकाभिषेक - अटल ध्यान की महत्ता का द्योतक है

महामस्तकाभिषेक - बाहुबलीजी की मौन साधना का अद्भुत उत्सव है

महामस्तकाभिषेक - गुल्लिका अज्जी की श्रद्धा का प्रतीक है

महामस्तकाभिषेक - कालल देवी के दृढ़ प्रतिज्ञ होने का परिचायक है

महामस्तकाभिषेक - अरिष्ट नेमि के श्रम का उत्सव है

आइये इस महापर्व में अपना सब कुछ समर्पित करें और तीर्थवन्दना का अपूर्व अवसर प्राप्त कर जीवन की क्षणभंगुरता को पहचानें और भगवान बाहुबलीमय हो जावें।

इसी भावना के साथ

Sarita Jain

सरिता एम.के. जैन

संपादकीय

अप्रैल 2016 में जैन तीर्थवन्दना के प्रधान सम्पादक के मनोनयन के साथ सम्पादकीय परामर्श मण्डल का भी पुनर्गठन किया गया। इस पुनर्गठित सम्पादकीय परामर्श मण्डल की भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के जैन, महामंत्री-श्री संतोषकुमार जैन पेंढारी, प्रधान सम्पादक डॉ. अनुपम जैन एवं सम्पादक श्री उमानाथ दुबे के साथ प्रथम बैठक राजस्थान के हाड़ौती अंचल के केन्द्र कोटा में 10 दिसम्बर 2016 की रात्रि 8.00 बजे सम्पन्न हुई। बैठक में परामर्श मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर (नागपुर), श्री शांतीलाल जैन जांगड़ा (उदयपुर) श्री अनिल जोहरापुरकर (नागपुर), श्री स्वराज जैन (दिल्ली) एवं श्री राजेन्द्र जैन महावीर (सनावद) के अतिरिक्त श्री हेमचन्द्र जैन (दिल्ली), प्रो.वी.के.जैन (राजा का ताल) एवं श्री निर्मल बंडी (गिरनार जी) भी उपस्थित रहे। सभी सदस्यों ने पत्रिका विषयवस्तु, प्रस्तुति एवं भावी योजना पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। जैन तीर्थ वन्दना के सुधी पाठकों हेतु ध्यातव्य निष्कर्ष निम्नवत् हैं:-

1- पत्रिका को संग्रहणीय एवं रुचिकर बनाने हेतु इसके प्रत्येक अंक में न्यूनतम एक आचार्य या ग्रंथ का परिचय प्रकाशित किया जाये।

2- प्रत्येक अंक में एक अप्रकाशित ग्रंथ पांडुलिपि का परिचय (सचित्र) प्रकाशित किया जाये इससे युवा पीढी को अपने गौरवपूर्ण अतीत की जानकारी मिलेगी।

3- प्रत्येक अंक में एक तीर्थ का परिचय इतिहास एवं पुरातत्व को ध्यान में रखकर दिया जाये। यदि शिलालेखों, प्रशस्तियों, दुर्लभ प्रतिमाओं को स्थान देवें तो अच्छा रहेगा।

4- शोधपूर्ण आलेखों को विशेष सावधानी के साथ प्रकाशित किया जाये। सन्दर्भ अधूरे न हों।

5- तीर्थों के प्रबन्धन में गुणात्मक सुधार हेतु तीर्थ यात्रियों एवं अनुभवी व्यक्तियों के सकारात्मक, रचनात्मक सुझावों एवं पाठकीय प्रतिक्रियाओं (तीर्थ विषयक) को भी स्थान दिया जाये।

6- प्रकाशनार्थ आलेख माह की 30 तारीख तक प्रधान सम्पादक के पास आ जाने पर ही अगले माह के अंक में स्थान पा सकेंगे। कृपया आलेख प्रधान सम्पादक को निम्न पते पर भेजें।

डॉ. अनुपम जैन

प्रधान सम्पादक-जैन तीर्थ वन्दना

ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर

इन्दौर-452009

anupamjain3@rediffmail.com

लेख word file एवं pdf दोनों रूपों में भेजें। समाचार, रिपोर्ट सीधे मुम्बई कार्यालय को भेजें

इन सभी निर्णयों के क्रियान्वयन में पाठकों का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा मई 2016 में दो वर्गों में घोषित अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता के प्रत्युत्तर में हमें कुल 76 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। समस्त प्रविष्ठियों का मूल्यांकन त्रिसदस्यीय निर्णायक मण्डल द्वारा किया गया।

माननीय निर्णायकों द्वारा प्रदत्त अंकों के आधार पर दोनों वर्गों हेतु निम्नवत् परिणाम घोषित किया गया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विजेताओं को क्रमश: रु. 2100-00, 1000-00 एवं 5000-00 की राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। तीनों सांत्वना पुरस्कारों के अन्तर्गत प्रत्येक को रु. 2000-00 तथा प्रमाण पत्र दिया जायेगा। पुरस्कार समर्पण समारोह वेलकम, फार्म हाउस-कोटा में भा.दि.जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी एवं कोटा के प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति में हुआ।

महिला वर्ग (50)

विषय: जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्थाओं में महिलाओं की सहभागिता।

प्रथम: श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर (म.प्र.)

द्वितीय: डॉ. (श्रीमती) विमल जैन विमल, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

तृतीय: श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर (म.प्र.)

सांत्वना: डॉ. सौ. लीना उदय चंवरे, कारंजा लाड़, वाशिम (महाराष्ट्र) (अनुपस्थित)

श्रीमती कांता जैन, अशोकनगर (म.प्र.)

सौ.नीला अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर (महाराष्ट्र)

युवा वर्ग (26)

विषय: जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका।

प्रथम: श्री विकास वात्सल्य, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

द्वितीय: सौ. शिल्पा पंकज कासलीवाल, फरीदाबाद (हरियाणा)

तृतीय: श्री शैलेन्द्र जैन सर्राफ, ललितपुर (उ.प्र.)

सांत्वना: श्री अपूर्व बड़जात्या, इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमती पिंकी सबलावत, कोलकाता (पं.बंगाल) (अनुपस्थित)

डॉ. (श्रीमती) समता जैन, इन्दौर (म.प्र.)

इस अवसर पर पुरस्कृत युवाओं की ओर से श्री विकास वात्सल्य एवं माननीय निर्णायकों की ओर से प्रो.वी.के. जैन (राजा का ताल- फिरोजाबाद) ने अपने विचार रखे। सभी ने प्रतियोगिता को अत्यन्त सफल एवं उपयोगी निरुपित करते हुए ऐसी प्रतियोगितायें भविष्य में भी आयोजित करने पर जोर दिया जिससे उच्च शिक्षित युवाओं, प्रोफेशनल्स के विचार जानकर उनको भी तीर्थ विकास से जोड़ा जा सके। वस्तुत: यह उपक्रम राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन के उदात्त आर्थिक सहयोग से सम्पन्न हो सका है, भविष्य में अन्य शिक्षाप्रेमी दानवीरों के सहयोग से ही ऐसे आयोजन हो सकेंगे।

जनवरी 2017 से इन निर्णयों के क्रियान्वयन में सुधी लेखकों, पाठकों से सहयोग का निवेदन है। वर्ष 2017 में हम अंचल केन्द्रित विशेषांकों के प्रकाशन की योजना बना रहे हैं जिसमें अंचलों को ही पहल करनी होगी। इच्छुक अंचल आगे आये तो श्रवणबेलगोला के ऐतिहासिक महामस्तकाभिषेक-2018 के पूर्व हम कुछ विशेषांक प्रकाशित कर सकेंगे।

परामर्श मण्डल के सुधी सदस्यों से भी सक्रिय सहयोग के अनुरोध सहित-

डॉ. अनुपम जैन

प्रधान सम्पादक

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 6 दिसम्बर 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रो.अनुपम जैन, इंदौर - प्रधान संपादक
उमानाथ दुबे - संपादक

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

णमोकार तीर्थ पर महामृत्युंजय विधान एवं पिच्छी परिवर्तन	8
जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका	9
जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता	12
मूकमाटी में आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना	16
Rediscovery of Jainism in Tamilnadu Part-4	20
सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी	25
कुमठा क्षेत्र का जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष द्वारा अवलोकन	31
कृति-मध्यांचल तीर्थ दर्पण	32
परिवर्तनवादी 110 वर्ष पुराना भातकुली तीर्थक्षेत्र का अधिवेशन	33
जैन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने वाली विभिन्न राष्ट्रीय संस्थायें	35
पुरा विरासत की अनुपम धरोहर है सीरोंन जी मडावरा	36
ग्वालियर नगर में स्थित जैन तीर्थ : गोपाचल पर्वत	37

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्गदर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बाडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।
2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

अतिशय क्षेत्र हुमचा में श्रीमती सरिता जी एवं महेन्द्र कुमार जी जैन के सम्मान की झलकियाँ

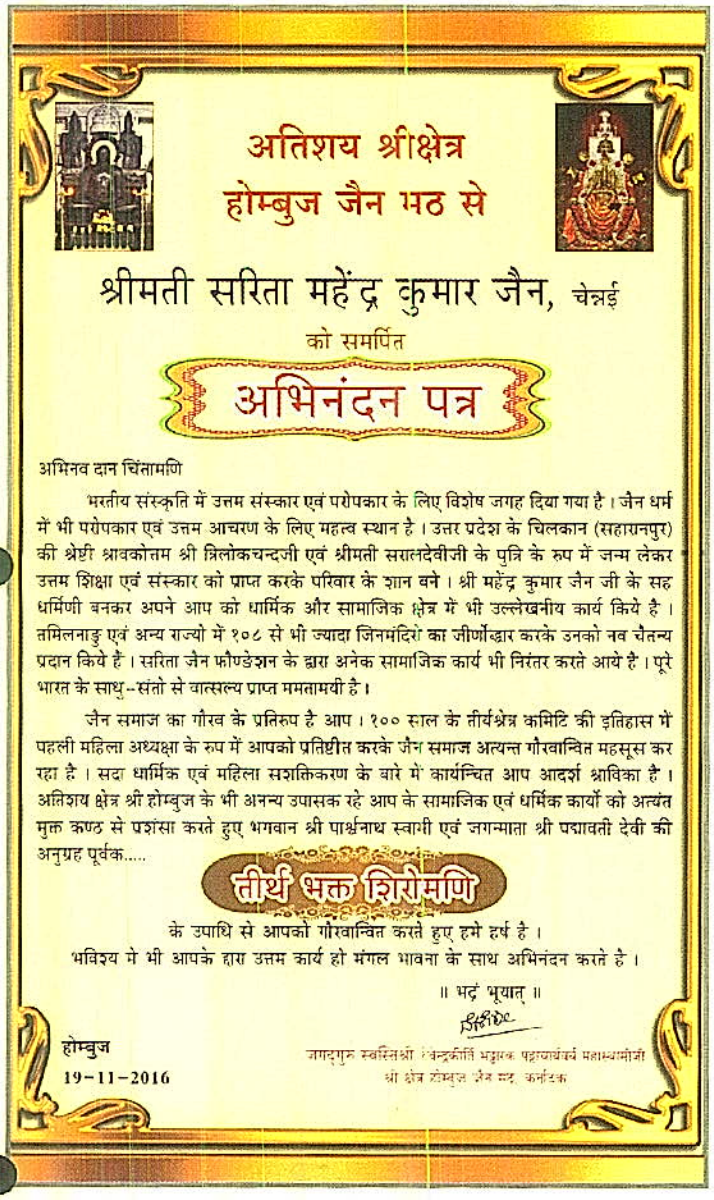

अतिशय श्रीक्षेत्र
होम्बुज जैन मठ से

श्रीमती सरिता महेंद्र कुमार जैन, चेन्नई

को समर्पित

अभिनंदन पत्र

अभिनव दान चिंतामणि

भरतीय संस्कृति में उत्तम संस्कार एवं परोपकार के लिए विशेष जगह दिया गया है। जैन धर्म में भी परोपकार एवं उत्तम आचरण के लिए महत्व स्थान है। उत्तर प्रदेश के चिलकान (सहारनपुर) की श्रेष्ठी श्रावकोत्तम श्री त्रिलोकचन्दजी एवं श्रीमती सरलदेवीजी के पुत्रि के रुप में जन्म लेकर उत्तम शिक्षा एवं संस्कार को प्राप्त करके परिवार के शान बने। श्री महेंद्र कुमार जैन जी के सह धर्मिणी बनकर अपने आप को धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किये है। तमिलनाडु एवं अन्य राज्यो में १०८ से भी ज्यादा जिनमंदिरं का जीर्णोद्धार करके उनको नव चैतन्य प्रदान किये है। सरिता जैन फौण्डेशन के द्वारा अनेक सामाजिक कार्य भी निरंतर करते आये है। पूरे भारत के साधु-संतो से वात्सल्य प्राप्त ममतामयी है।

जैन समाज का गौरव के प्रतिरुप है आप। १०० साल के तीर्थश्रेत्र कमिटि की इतिहास में पहली महिला अध्यक्षा के रुप में आपको प्रतिष्ठीत करके जैन समाज अत्यन्त गौरवान्वित महसूस कर रहा है। सदा धार्मिक एवं महिला सशक्तिकरण के बारे में कार्यन्वित आप आदर्श श्राविका है। अतिशय क्षेत्र श्री होम्बुज के भी अनन्य उपासक रहे आप के सामाजिक एवं धर्मिक कार्यो को अत्यंत मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी एवं जगन्माता श्री पद्मावती देवी की अनुग्रह पूर्वक.....

तीर्थ भक्त शिरोमणि

के उपाधि से आपको गौरवान्वित करते हुए हमे हर्ष है।
भविश्य मे भी आपके हारा उत्तम कार्य हो मंगल भावना के साथ अभिनंदन करते है।

॥ भद्रं भूयात् ॥

होम्बुज
19-11-2016

जगद्गुरु स्वस्तिश्री देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्यवर्य महास्वामीजी
श्री क्षेत्र होम्बुज जैन मठ, कर्नाटक

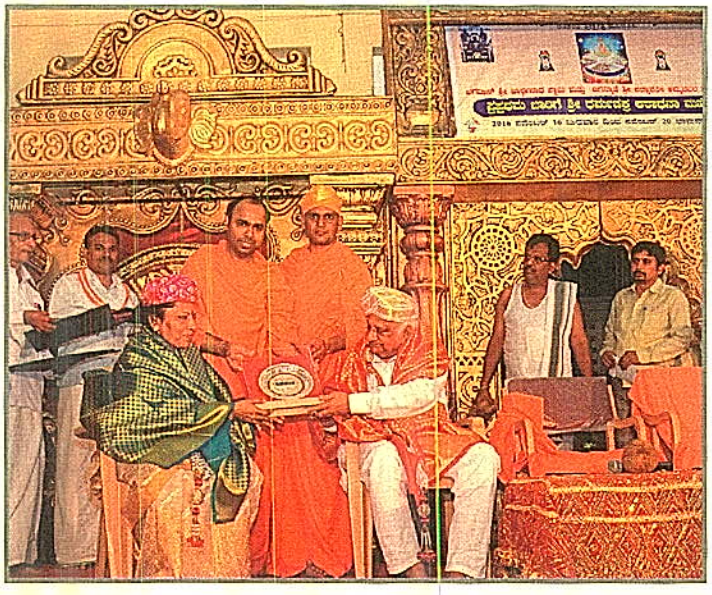

णमोकार तीर्थ पर महामृत्युंजय विधान एवं पिच्छी परिवर्तन

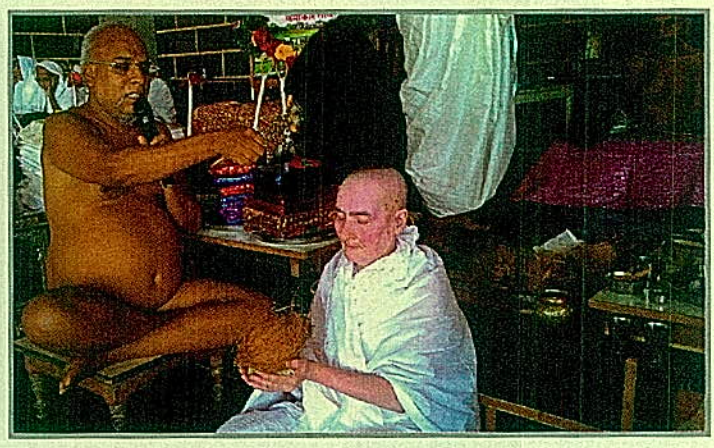

चांदवड: स्थित णमोकार तीर्थपर सारस्वताचार्य श्री देवनंदीजी गुरुदेव का 37 वा पिच्छी परिवर्तन महोत्सव एवं क्षुल्लिका श्री अमोघमती माताजी का आर्यिका दीक्षा संस्कार समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। माताजी का नूतन नामकरण आर्यिका चरित्रश्री रखा गया। क्षुल्लिकाश्री श्रेयसमती माताजी का प्रथम संयम दीक्षा दिवस आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में तथा हजारों श्रद्धालुओं के उपस्थिती में संपन्न हुआ। देश के चारों कोनों से भक्तों की भीड़ लगी हुई थी।

महामृत्युंजय विधान एवं वात्सल्य भोजन का बहुमान क्षेत्र के अध्यक्ष एवं संघपती नीलम अजमेरा तथा दीपक अजमेरा द्वारा हुआ। इस समारोह में औरंगाबाद पंचायती के अध्यक्ष ललित पाटणी, भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष प्रमोद कासलीवाल, महामंत्री देवेंद्र काला, जीर्णोद्धार समिति के अध्यक्ष अनिल जमगे, महावीर गंगवाल, पवन पाटणी, अतुल जैन, विजय लोहाडे, अनिल अजमेरा, केतन ठोले, मनोज साहुजी, बि कासलीवाल, नवीनजी, संजय पहाडे, संजय कासलीवाल, कैलासचंदजा चांदीवाल, भूषण कासलीवाल आदि अनेक मान्यवर उपस्थित थे।

-रविंद्र कटके

नारी गौरव श्रीमती सुशीला जी पाटनी (आर के मार्बल किशनगढ़) का पुणे आगमन पर दिगंबर जैन मगरपट्टा समाज द्वारा भाव भी ना स्वागत किया गया समाज द्वारा उन्हें "दान चंद्रिका" के अलंकरण से सुशोभित किया गया. विदुषी डॉ0 नीलम जैन जी ने उनका स्वागत किया। मगरपट्टा के मंदिर में अनेक राज्यों एवं शहरों से सर्विस के लिए आने वाले युवा धर्म सीख रहे हैं और स्वयं को संस्कारित कर रहे हैं श्रीमती सुशीला पाटनी जी ने यहां के युवाओं और बच्चों के कार्यक्रमों को देख कर कहा कि यहां सचमुच अद्भुत और अनुपम कार्य हो रहा है ★★★★

निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई द्वारा मई 2016 में दो वर्गों में घोषित अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता के प्रत्युत्तर में हमें कुल 76 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। समस्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन निम्नांकित त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा किया गया।

1. प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

2. प्रो. विमल कुमार जैन, राजा का ताल (उ.प्र.)

3. सौ. विजया अविनाश संगई, अंजनगाँव सुर्जी (महाराष्ट्र)

माननीय निर्णायकों द्वारा प्रदत्त अंकों के आधार पर दोनों वर्गों हेतु निम्नवत् परिणाम घोषित किया जाता है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विजेताओं को क्रमश: रु. 21000-00, 11000-00 एवं 5000-00 की राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे। तीनों सांत्वना पुरस्कारों के अन्तर्गत प्रत्येक को रु. 2000-00 तथा प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

महिला वर्ग (50)

विषय: जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्थाओं में महिलाओं की भागिता।

प्रथम: श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर (उ.प्र.)

द्वितीय: डॉ. (श्रीमती) विमल जैन विमल, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

तृतीय: श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर (म.प्र.)

सांत्वना: डॉ. सौ. लीना उदय चंवरे, कारंजा लाड़, वाशिम (महाराष्ट्र)

श्रीमती कांता जैन, अशोकनगर (म.प्र.)

सौ.नीला अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर (महाराष्ट्र)

युवा वर्ग(26)

विषय: जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका।

प्रथम: श्री विकास वात्सल्य, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

द्वितीय: सौ.शिल्पा पंकज कासलीवाल, फरीदाबाद (हरियाणा)

तृतीय: श्री शैलेन्द्र जैन सर्राफ, ललितपुर (उ.प्र.)

सांत्वना: श्री अपूर्व बडजात्या, इन्दौर (उ.प्र.)

श्रीमती पिंकी सबलावत, कोलकाता (प.बंगाल)

डॉ. (श्रीमती) समता जैन, इन्दौर (म.प्र.)

पुरस्कार समर्पण समारोह रविवार, दिनांक 11.12.16 को वेलकम फार्म हाउस, जयपुर रोड, कोटा में सायं 7.00 बजे सम्पन्न होगा। आवास एवं यातायात व्यवस्था हेतु कोटा के सम्पर्क सूत्र निम्नवत् हैं-

1. श्री हुकम काका- 09414184618

2. एडवोकेट श्री गोपाल जैन- 09414178983

3. श्री राजेन्द्र गोधाजी- 09829900001, 09414044688

(संतोष कुमार जैन पेंढारी)
महामंत्री- तीर्थक्षेत्र कमेटी

(डॉ. अनुपम जैन)
संयोजक-निबंध प्रतियोगिता

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका

प्रस्तावना- जैन धर्म और अध्यात्म चार स्तंभों पर आधारित है- तीर्थंकर, जिनवाणी, तीर्थ तथा हमारी समाज। तीर्थंकर जिन्होंने अपनी आत्मसाधना, तप, त्याग तथा जीवन दर्शन से जिस सर्वोच्च वास्तविकता को प्राप्त कर विश्व को वास्तविक सुख-शांति तथा यथार्थ जीवन जीने की कला का दिग्दर्शन कराया, उन्हीं महान आत्माओं के स्मृति चिन्ह के रूप में ये तीर्थ बन गए, जहाँ पहुँचकर भव्यजन आत्मिक शांति प्राप्तकर, अपने जीवन को धन्य बना लेते हैं।

तीर्थ और उनका ध्येय:- जैन तीर्थ सांसारिक राग के पोषण के लिए नहीं बनाए जाते बल्कि ये वीतरागता की पवित्र ज्योति के प्रकाश-पुंज होते हैं, जहां से संसार के दिग्भ्रमित लोगों को सही दिशा प्राप्त होती है। विज्ञान ने भी यह सिद्ध किया है कि शब्द कभी लुप्त नहीं होते किन्तु वे आकाश व वायुमण्डल में विद्यमान रहते हैं। जन तीर्थस्थलों पर तीर्थंकर एवं मुनियों ने तप किया, ज्ञान प्राप्त किया व उपदेश दिया व जहां पर भक्तजन पूजा, अर्चना व मंत्रोचारण करते रहते हैं उस भूमि का वायुमण्डल श्रद्धा, भक्ति, पवित्रता व उत्तम गुणों की ओर स्वत: प्रेरित करने वाला बन जाता है। आज के तनावयुक्त वातावरण में निश्चित ही ये तीर्थ शांति, समता, समन्वय, अनेकांत और अहिंसा का संदेश दे रहे हैं।

वर्तमान में जैन तीर्थों की स्थिति: (एक आंकलन)- इसे हम तीन भागों में बांटकर समझ सकते हैं। पहला-कुछ तीर्थ स्थल, अतिशय क्षेत्र, जो आधुनिक शैली से अत्याधिक विकसित हुए हैं। जहां सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं और निरंतर इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है जैसे-सम्मेदशिखर जी, महावीर जी, कुण्डलपुर, तिजारा, मांगीतुंगी।

दूसरा-ऐसे तीर्थ स्थल जो हमारे पास हैं पर हमारी उदासीनता, निष्क्रियता अर्थाभाव में सुविधा विहीन हैं, जो लुप्त होने के लगार पर हैं।

तीसरा-ऐसे तीर्थ जो हमारे होते हुए भी हमारे नहीं हैं, अन्य संप्रदाय के हाथों में चले गए हैं। जैसे-गिरनार जी, तिरुपति बालाजी.... आदि हम कब तक मौन रहेंगे?:- संपूर्ण भारत में पुरातत्व की दृष्टि से जैन समाज के पास अतुलनीय सम्पदा है, किन्तु प्राचीन तीर्थों, मूर्तियों शिलालेखों कें संरक्षण की ठोस पहल नहीं की गई। खजुराहो, विदिशा, मथुरा, वाराणसी, झांसी आदि के संग्रहालय की जो प्रतिमाएं हैं, उनका अभिषेक पूजन तक नहीं हुआ। खण्डगिरी-उदयगिरी की गुफाएं अतिक्रमणकरियों के हाथों में चली गई। उ.प्र. के ललितपुर जिले के मदनपुर तीर्थ के पुरातत्व विभाग ने अपने कढजे में ले लिया परिणाम स्वरुप तीर्थंकर मल्लिनाथ जी की विशाल प्रतिमा वहां से गायब हो गई। इसमें सबसे बड़ा दोष पुरातत्व विभाग का है, पर जैन समाज भी कम दोषी नहीं है।

गोलाकोट तीर्थक्षेत्र की प्रतिमाओं का सिर काटकर ले जाना मोदीमढ़ और पंचमढ़ स्थित भगवान शांतिनाथ के 12वीं सदी के मंदिर रातों-रात ध्वस्त होना, अलवर के निकट सरिस्का अभ्यारण में नीलगिरि में सेंकड़ों जैन प्रतिमाओं का टिन शेड में बदहाल स्थिति में रखा होना, हमारे तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा व्यवस्था एवं हमारे सामर्थ्य पर बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह है। आए दिन मंदिरों से मूर्तियों का, दान-पेटी, छत्र व अन्य सामग्रियों के चोरी होने पर भी हम चेतते नहीं हैं। बड़े तीर्थों पर नक्सलवाद व अन्य सप्रंदाय की जड़े मजबूत हो चुकी हैं और उन्हें उखाड़ने के बजाय हम उनसे भयभीत हो रहे हैं। आखिर, हम कब तक मौन रहेंगे?

संतों ने जगाई आशा की किरण:- संपूर्ण जैन समाज को युवा संतों का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने अपने आत्मकल्याण के साथ-साथ तीर्थक्षेत्रों,

अतिशयक्षेत्रों के जीर्णोद्धार, संरक्षण एवं उनके विकास की अलख जगाई। प.पूज्य मुनिश्री समन्तभद्र जी महाराज एवं प.पूज्य आचार्य श्री आर्यनंदी जी महाराज का अमूल्य योगदान हैं कि उन्होंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को संरक्षण दिया और उस समय एक करोड़ रु.का फण्ड एकत्रित करवाया। इस राशि के ब्याज से अनेक तीर्थ संरक्षित हुए। प.पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अभ्युदय के साथ तीर्थक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों मूर्तियों के संरक्षण की विशेष पहल प्रारंभ हुई। उन्होंने समाज को प्रेरित किया कि वे अपनी धरोहर को स्वयं संरक्षित करें। फल स्वरूप आहार, पपौरा, मुक्तागिरि, नैनागिरि, थूबौन जी, रामटेक, कुण्डलपुर, बोहरीबंद आदि अनेक तीर्थक्षेत्रों को संरक्षित कर क्षेत्र कमेटीयों को प्रभावी बनाया गया। मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा से देवगढ तीर्थक्षेत्र की हजारों प्रतिमाएँ सुरक्षित हुई।

और भी अन्य आचार्यों, मुनि महाराजजी की प्रेरणा से महारौनी, खंदारगिरि, बजरंगगढ, सांगानेर, बैनाड़, पौपुरा, बिजौलिया खौसा, चांदखेड़ी, आवां टोक, चमत्कार जी रणथौम्भउर, इन्दरगढ, जबलपुर आदि तीर्थस्थानों पर जो संरक्षण व विकास कार्य हुए हैं वे स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं।

जैन युवाओं की भूमिका (युवा शक्ति):- आगम में वर्णित है- भरत चक्रवर्ती के 16 स्वप्नों में 11 वाँ स्वप्न था कि दो तरुण बैल उच्च स्वर में उद्घोष कर रहे हैं, जिसका अर्थ था कि पंचमकाल में धर्म की पताका युवा ही संभालेंगे, अर्थात धर्म युवावस्था में ही संभव होगा। समाज में युवा ही छोटों के लिए आदर्श, वृद्धों का सहारा बनते हैं। जिस देश में युवा चरित्रवान कर्मठ, संयमी और प्रज्ञावान होते है वह देश और समाज नित नई ऊंचाइयों को छूता है।

युवा का उल्टा वायु होता है। वायु जैसे चंचल होती है वैसे ही युवा होते हैं। बिना दिशा के वायु तूफान बन जाती है, वहीं दिशा मिल जाए तो प्राणवायु बन जाती है। जो महत्व शरीर में प्राणवायु (श्वांस) का है, वही महत्व समाज में युवाओं का है। युवा किसी भी कार्य को बहुत अच्छी तरह से कार्यान्वित कर सकता है। कारण-उसके पास कल्पनाशक्ति ऊर्जा और क्षमता है, कार्य करने की हिम्मत और लगन... क्योंकि-

हम मोड़ पर, गिर-गिर के उठा जाता है
तब कहीं आदमी, मंजिल का पता पाता है
पंख तो सिर्फ, सहारे के लिए होते हैं।
पंखों से नहीं, हौसलों से उड़ा जाता है।

(-गुलाबचंद वात्सल्य)

युवा पहल करें तो सब संभव है:-

शुरुआत स्वयं से करें:- स्वयं सुधरेंगे-जग सुधरेगा युवा अपने आचार-विचार, आहार को शुद्ध रखें। स्वयं के चारित्रिक दोषों के दूर करें। वे आधुनिक हों, सफल हों पर धर्म विमुख न हों। श्रावक के षट आवश्यक का पालन करें। धर्म उनकी पहचान न होकर, उनके आचरण से धर्म पहचाना जाए। युवाओं को भीड़ का हिस्सा नहीं, भीड़ का कारण बनना होगा तभी समाज को आगे बढा सकते हैं।

स्वाध्याय को बनाएं जीवन का हिस्सा:-

जब तक जैन मूल सिद्धांतों का ज्ञान नहीं होगा, उस पर अमल कैसे करेंगे। चारों अनुयोग के ग्रंथों के अध्ययन से हमारी शंकाओं का निवारण होगा, विचारों में दृढता आएगी और हम अन्य मतावलम्बियों के प्रभाव में नहीं आ सकेंगे हमारे मन में धर्म व धर्मायतनों के प्रति श्रद्धा, समर्पण के भाव जागृत होंगे।

जैन संस्कृति की रक्षा-वास्तविक तीर्थ सुरक्षा:-

भव्य मंदिरों, धर्मशालाओं का निर्माण संरक्षण मात्र नहीं होता वरन् अपनी वीतरागी संस्कृति की रक्षा करना भी सबसे बड़ा संरक्षण है। मंदिर-भवन की सीढियाँ तो टूटी-फूटी चल जाएंगी, परंतु यदि संस्कृति टूट गई तो उसके बेशकीमती धागे फिर जुड़ना मुश्किल हो जाएगा, इसलिए संस्कृति की कड़ी को सुरक्षित रखना समाज के युवाओं का महत्वपूर्ण दायित्व है।

जैन समन्वय-आज की महती आवश्यकता:-

महाश्रमण महावीर स्वामी के पांच छह सौ साल तक संभवत: हम एक ही थे, पर आचार्य भद्रबाहु स्वामी के पश्चात् से जैन-जगत दो धाराओं में बँट गया। आज अपनी धर्म, दर्शन की एक समरसता होने के बाद भी हम सामाजिक रूप से सैकड़ों टुकडों में बंट चुके हैं। न जाने कितने-कितने पंथ बन गए... जो अपने बीच कांच की दीवार की तरह है, जिसके आर-पार हम देख तो सकते हैं पर संवाद नहीं हो पाते और ये संवादहीनता हमें तोड़ रही है। हम शक्तिशाली होकर भी कमजोर हो रहे हैं। अल्पसंख्यक घोषित होने पर हर्षित हो रहे हैं। हमें हमारे हठीले आग्रह, काल्पनिक सांप्रदायिकता को तोड़ना होगा। पूरी जैन समाजों को एक समाज बनाना होगा। वैचारिक और सामाजिक एकता के धागे, जो टूट-टूटकर बिखरे हुए हैं, उन्हें जोड़कर एक नए केशरिया धर्मध्वज का निर्माण करना होगा, और यह कार्य जैन युवा अच्छे से कर सकता है।

युवा शक्ति करे प्रयास: होगा तीर्थों का संरक्षण और विकास:- (सकारात्मक उपाय)

तीर्थों पर होंगे संस्कार शिबिर-मिटेगा अज्ञान का तिमिर:-

युवाओं में ज्ञान और संस्कारों की नींव मजबूत करने हेतु तीर्थों पर वर्ष में कम से कम एक बार शिविर का आयोजन किया जाए। जहां तत्वचर्चा के माध्यम से विचारवान, विवेकवान, व्यसनमुक्त युवाओं का निर्माण हो। यहां विभिन्न स्थानों के लोगों से परिचय बढेगा, विचारों का आदान प्रदान होगा, भावनात्मक रूप से आपस में जुड़ेगें। सामाजिक समरसता का विकास होगा। इन शिविरों में-

अखिल भारतीय तीर्थक्षेत्र कमेटी की उपस्थिति में जैन तीर्थ के संरक्षण एवं विकास विषय पर परिचर्चा हों, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से आए युवा अपने क्षेत्र के तीर्थों, अतिशय क्षेत्रों के बारे में जानकारी दें, वहां कोई समस्या हो तो उसके समाधान की ठोस कार्य योजना बनाएं।

तीर्थों की शुचिता:- युवा वर्ग प्रत्येक तीर्थक्षेत्र में स्वच्छतीर्थ अभियान की शुरुआत करें। प्राय: क्षेत्रों के आसपास, शिखरों पर खाद्य-पेय पदार्थों, रेपर, डिस्पोजेबल, गंदगी के ढेर वहां की पवित्रता, शुचिता, अतिशय को खंडित करते हैं। गंदगी में उत्पन्न असंख्यात जीवों की हिंसा का पाप भी लगता है। पहाड़ों पर हम जो कुछ भी खरीद कर खाते हैं, उससे अप्रत्यक्ष रूप से नक्सलवाद अन्य मतावलम्बियों की जड़े मजबूत हो रही हैं। भविष्य में इसके दुष्परिणाम हो सकते हैं इसलिए हमारी पूरी कोशिश हो कि तीर्थवंदना करते समय हम अन्न का त्याग करें या स्वयं का बनाया खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। जो द्रव्य आदि चढाते है ध्यान रहे कि उसकी अविनय न हो।

अभक्ष्य भक्षण-तीर्थों की गरिमा पर आघात:- याद रहे हमारे तीर्थ स्थल पिकनिक-स्पॉट नहीं हैं। यहां भक्षण नहीं होना चाहिए पर यदि कहीं हो रहा हैं तो उसे रोकना जैन युवाओं का कर्तव्य है। तीर्थों पर रात्रिभोजन, नशा, गुटखा, गढंत आदि से वहां की गरिमा को आघात लगता ही है पाप के भागी भी होते हैं। अन्य समाजों में गलत संदेश जाता है। युवा शक्ति तत्काल इस पर रोक

लगाए, नहीं तो-तीर्थ स्थलों को धार्मिक क्लब बनते देर नहीं लगेगी।

तीर्थों पर चार दान की व्यवस्था-सोने पर सुहागा-आहारदान और ज्ञानदान की लगभग सभी क्षेत्रों में बहुत अच्छी व्यवस्था है। यदि औषधिदान और अभयदान से संबधित कार्य किए जाएं तो सोने में सुहागा होगा। तीर्थों पर योग, ध्यान, प्राकृतिक चिकित्सा आदि की व्यवस्था युवाओं द्वारा की जा सकती है। तीर्थों, अतिशय क्षेत्रों में पाजीटिव एनर्जी का वर्तुल रहता है। आहार-विहार शक्ति के साथ नैसर्गिक पद्धति से चिकित्सा हो तो कई गुना अधिक लाभ मिलेगा। जो यहां स्वस्थ होते हैं फिर वे स्वप्रेरणा से कुछ समय अपनी सेवाएं दें। इस प्रकार यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। तिर्यंच गति सबसे दु:खदायी है। यदि मूक पशुओं के लिए गौशाला, चारागाह, पेयजल टैंक, पक्षियों के लिए दाना-पानी आदि की व्यवस्था कर हम अभयदान, जीव दया का कार्य कर सकते हैं।

साहित्य प्रकाशन:- साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं निर्माता होता है- इस कथन को ध्यान में रखकर तीर्थ वंदना जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन व प्रचार-प्रसार हो। जिसमें तीर्थक्षेत्रों का इतिहास, अतिशय पहुँच मार्ग, फोन, मोबाईल नंबर, वेबसाइट आदि की जानकारी के साथ-उसके आसपास के क्षेत्रों की जानकारी हो। तीर्थों के संरक्षण व विकास के उल्लेखनीय कार्य व भविष्य की योजनाओं का प्रकाशन हो। इस संबंधी प्रेरक लेख, कविताओं कहानियों प्रकाशित की जाएं।

आधुनिक संचार साधन लिखेंगे विकास की नई गाथा:- आज का युग सिलिकॉन वैली का युग है। इन्टरनेट, मोबाइल, फेसबुक ट्विटर, व्हाट्स ॲप, टी.व्ही आदि साधनों का प्रयोग धर्मतीर्थ, जिनवाणी के प्रचार-प्रसार के लिए किया जाए तो तीर्थों के संरक्षण व विकास कार्य को बहुत आसानी से गति दी जा सकती है। युवा जो तकनीकी ज्ञान रखते हैं- विभिन्न तीर्थों एवं प्रथमानुयोग की कथाओं पर डाक्यूमेंट्री फिल्में, शार्ट फिल्में एनीमेशन फिल्में बनाएं। ये बहुत असरदार तरीका होगा लोगों को धर्म व धर्मायतनों से भावनात्मक रूप से जोड़ने का। युवाओं को रोजगार भी मिलेगा अनूठी पहल- क्षेत्रों में मिनी थियेटर हॉल बनाएं जाएं- इस अनूठी योजना की शुरुआत हम बड़े तीर्थ क्षेत्रों से कर सकते हैं। इसमें जैन इतिहास, तीर्थंकरों आचार्यों, मुनियां, जैन महापुरुषों की जीवनियां संबंधी फिल्में दिखाई जाएं। फिल्में हमारे अचेतन मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। विशेष अवसर पर नाटकों का मंचन भी किया जा सकता है। इसमें बच्चे, युवा, बुजुर्ग सभी तीर्थ के प्रति आकर्षिक होंगे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम दिल्ली स्थित अक्षरधाम में देख सकते हैं। निश्चित ही ये अभिनव पहल तीर्थों के विकास में मील कर पत्थर साबित होगी।

साइन वोर्डों से मिलेगातीर्थों को जीवन दान:- रेल्वे स्टेशन, बस स्टेण्ड पर बोर्ड लगाए जाएं जिसमें दूरी, मार्ग विवरण, पहुंचने का साधन, स्थानीय व्यक्ति के संपर्क नंबर के साथ क्षेत्र के संपर्क नबंर आदि का विवरण हो साथ ही हाइवे एवं यात्रा मार्ग पर साइन बोर्ड अवश्य हों। दक्षिण में तमिलनाडू, बैंगलोर जैस कई शहरों में इस तरह की पहल की गई फलस्वरुप वहां दशार्नार्थियों की संख्या कई गुना बढ गई, दानराशि भी अधिक आई और वहां के विकास कार्यों को नई ऊर्जा मिल गई। सभी जैन क्षेत्रों मे ऐसे साइनबोर्ड अवश्य होना चाहिए।

तीर्थों को गोद लें:- जो तीर्थ लुप्त प्राय: है और जहां उचित देखरेख नहीं हो पा रही है, अर्थाभाव के ऐसे तीर्थों को निकट की समाज के युवा गोद लेकर, उन्हें विकसित कर सकते हैं।

युवाओं को अलंकृत करना:- जो युवक तीर्थ संरक्षण एवं उनके विकास में पूरी निष्ठा ईमानदारी, सेवाभाव, सक्रियता से उल्लेखनीय कार्य करते हैं उन्हें अ.भा.स्तर पर प्रोत्साहित करने हेतु तीर्थ भक्त तीर्थरत्न, सम्मानित किया जाना चाहिए। इससे अन्य युवा भी प्रेरित होंगे।

अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना- जैन विषयों पर तीर्थों पर, पुरातत्व पर जो भी विषयमूलक क्रियात्मक अनुसंधान करना चाहे इस हेतु तीर्थों, अतिशय क्षेत्रों पर समुचित हो ताकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं पूर्ण प्रमाणिकता के साथ सिद्धांतों का प्रायोगिक तौर पर प्रतिपादन किया जा सके।

तीर्थों को रेलमार्ग से जुड़ नहीं पाए हैं। जिससे इन क्षेत्रों की यात्रा असुविधा जनक हो जाती है, खासकर हमारे बुजुर्गों की। ऐसे क्षेत्रों को रेलमार्ग से जोड़ने के लिए सरकारी स्तर पर युवाओं को अपनी सारी शक्ति लगा देना चाहिए। तीर्थो के संरक्षण व विकास में ये महत्वपूर्ण कदम होगा।

प्रत्येक तीर्थक्षेत्र के ट्रस्ट पंजीकृत हों, प्रतिवर्ष उनका ऑडिट हो ताकि अधिनियम की विभिन्न छूट का पूर्ण लाभ मिल सके। ऐसा होने से लोग मुक्तहस्त से दान देंगे, दान का सदुपयोग होगा। कुछ जैन तीर्थों में ये व्यवस्था है

शासकीय अधिनियमों का लाभ:- पुरातात्विक अवशेष ये बताते हैं कि किस तरह जैन मूर्तियों एवं तीर्थों का विध्वंस किया गया। हमारे प्राचीन स्मारकों की सुरक्षा, संवर्धन एवं विनिर्माण संबंधी अधिनियमों को प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर लिखवाया जाना अनिवार्य हो। जैसे-

पुरात्वात्विक स्मारक संरक्षण अधिनियम 1904

प्राचीन स्मारक, पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनिय 1051

पुरावेशष व बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम 1972... इत्यादि यदि कोई मंदिर है तो उसका पंजीयन राज्य पब्लिक ट्रस्ट एक्ट और पुरावेश का पंजीयन 1972 के अधिनियम (केन्द्रीय कानून) के तहत होगा। इन अधिनियमों को समझकर इसका अधिकतम लाभ लेना होगा।

विदेशी सरकारों से आग्रह:- हाल ही में अफगानिस्तान में बहुत बड़ा शिलालेख मिला है, जिसमें 24 तीर्थंकर बने हैं। बृहत्तर भारत के विभाजन के पश्चात् जो जैन तीर्थ अन्य देशों में पहुँच गए हैं, उन देश की सरकारों से उनके संरक्षण व विकास की मांग की जाए।

और अंत में:- जब एक नदी सागर में समर्पित होती है जब एक बूंद सीप में और बीज मिट्टी में समर्पित होता है तो विराटता को प्राप्त होता है। ठीक इसी तरह युवाओं का तीर्थों के प्रति समर्पण सुखद स्वर्णिम समाज का निर्माण करेगा। हम पुण्यशाली हैं कि शाश्वत तीर्थों के दर्शन, वंदना करने का सौभाग्य मिल रहा है और इसके लिए हमें अपने पूर्वजों, बुजुर्गों का आभार मानना चाहिए, जिन्होंने यह गौरवशाली तीर्थ रुपी संपदा हमें सौंपी। अब हम युवाओं का कर्तव्य है कि अपनी जागरुकता, आत्मविश्वास कुशल नेतृत्व, संकल्पशक्ति, श्रद्धाभाव से तीर्थों के संरक्षण व विकास की अद्वितीय योजना बनाएं और उसका क्रियान्वयन करें, ताकि संपूर्ण विश्व में अहिंसा अनेकांत, स्यादवाद ओर जिनधर्म, श्रमण संस्कृति का उद्घोष हो।

अंत में पिताजी कवि श्री गुलाबचंद वात्सल्य जी की इन पंक्तियों के साथ

सारांश:- धर्म मात्र चर्चा नहीं, प्रवचन नहीं, प्रयोग है
आचरण में धर्म को, अभिव्यक्त होना चाहिए।
धर्म की क्रियाएं दुहराना, अलग ये बात है
धार्मिक उपलब्धियां, चेहरे पे आना चाहिए।
प्रगतिशील, विचारवाला, आज है अपना युवा

आ. भा. निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता के महिला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त लेख

जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता

- श्रीमती ऊषा पाटनी, इंदौर

भारत भू आध्यात्म धरा, यह पुरातत्व की खान है
कण-कण में भगवान यहां और उन्नत तीर्थ महान हैं
जिन शासन की अमूल्य धरोहर, नष्ट ना होने पाये कदा,
आगे आकर महिलाओं को भी देना होगी सहभागिता।
तीर्थ का करो विकास-व्यवस्था में दो साथ।

जिस प्रकार सुंदर रत्नमणियों से स्वर्णाचल की शोभा बढ जाती है, जिस प्रकार जगमगाते चन्द्रमा और झिलमिलाते तारों से गगन का सौन्दर्य निखर उठता है, जिस प्रकार रंग-बिरंगे, सुरभित पुष्पों से उपवन की शोभा द्विगुणित हो जाती है, जिस प्रकार हरी-भरी पत्तियों और मधुरस से भरे फलों से वृक्ष की महत्ता बढ जाती है उसी तरह पर्वत की श्रृंखलाओं, नदियों के तट एवं बियाबान वन एवं गुफाओं में जहां बैठकर हमारे 24 तीर्थंकरों ने कठिन तप-साधना करके मुक्ति पाई, अनंतानंत मुनियों के चरण जहां पड़े और उन्होंने कर्म काटकर निर्वाण पद पाया अथवा वे स्थान जहाँ अविस्मरणीय अचरजकारी घटनाक्रम के माध्यम से जिनेन्द्र देव की प्रतिमायें प्रकट हुई है, वे समस्त स्थान तीथक्षेत्र की संज्ञा से पुकारे जाते हैं। जिनकी वंदना करने से पापों का क्षय होता है, और पुण्य का संचय होकर परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सहस्त्रों जैन तीर्थों के माध्यम से विश्व को सत्य-अहिंसा एवं शांति का संदेश देते ये तीर्थ जन-जन के आराध्य स्थल हैं एवं जैन समाज की अनमोल धरोहर हैं, जिसे हमारे पूर्वजों ने हमें इस आशा के साथ सौंपा है कि हम इनकी कीर्ति में चार चांद लगायेंगे। सृष्टि के आदिकाल से ही तीर्थंकर की माता होने के गौरव से गरिमा मण्डित हो जैन समाज की महिलाओं ने अपनी धर्म बीज का तीर्थ वृक्ष के रूप में विकसित होना महिलाओं द्वारा अपने बच्चों में रोपे गये संस्कारों का परिणाम है। जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता निश्चित रूप से आशातीत परिणाम लायेगी परंतु उसके बारे में चर्चा करने से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है तीर्थ क्या है? उनकी वर्तमान स्थिति कैसी है? तीर्थ के विकास और व्यवस्था में महिलाएं किस प्रकार से अपनी सहभागिता दे सकती हैं।

तीर्थ की परिभाषा-

संसाराब्धेरपारस्य तारणे तीर्थ मिष्यते।
चेष्टितं जिननाधायां तस्योक्तिस्तीर्थ संकथा।।

अर्थात् जो संसार समुद्र से पार करे उसे तीर्थ कहते हैं जो तीर्थ जिनेन्द्र भगवान का चरित्र ही हो सकता है। तीर्थ स्थान पवित्रता, शांति और कल्याण के धाम माने जाते हैं और यही कारण है कि चाहे वृद्ध हो या बालक, श्री सम्मेदशिखरजी, राजगृही, मांगीतुंगी, गिरनारजी जैसे कठिन चढाई वाले पर्वत पर भगवान का नाम स्मरण करते हुए हंसते-हंसते चढ जाते हैं।

तीर्थक्षेत्र 3 प्रकार के माने जाते हैं-

निर्वाण क्षेत्र- सम्मेदशिखर, चंपापुरी, गिरनार, अष्टापद एवं पावापुरी 5, तीर्थंकर निर्वाण भूमियां एवं मांगीतुंगी, बावनगजा, सिद्धवरकूट, गजपंथ, सोनागिरि आदि क्षेत्र जहाँ से अनंतानंत सिद्धों ने निर्वाण पद पाया है।

अतिशय क्षेत्र- वे तीर्थ क्षेत्र जहां तीर्थंकर भगवंतों के जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याण हुए हैं जैसे-अयोध्या, हस्तिनापुर, राजगृही बनारस, सिंहपुरी, काकंदी, श्रावस्ती, प्रयाग, चन्द्रपुरी आदि तीर्थ क्षेत्र।

इन समस्त तीर्थक्षेत्रों की वंदना करने से हमें महसूस होता है-
तीर्थराज सम्मेदशिखर मानों मस्तक की शोभा है,
वक्षस्थल पावापुरीजी जहां कमल-सरोवर आभा है,
चरण-कमल की रज पाने को भक्त अष्टापद आते हैं,
चंपापुरी और गिरनार हस्त जो धर्म ध्वजा फहराते हैं।

तीर्थ क्षेत्र का महत्व-

तीर्थ यात्रा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए ग्रंथों में कहा गया है,

तीर्थ भूमिका के मार्ग की रज इतनी पवित्र होती है कि उसके आश्रय से मनुष्य रजरहित अर्थात कर्ममल रहित हो जाता है। तीर्थों पर भ्रमण करने से संसार का भ्रमण छूट जाता है। तीर्थ पर धन व्यय करने से अविनाशी संपदा मिलती है तथा जो भव्य जन तीर्थ पर जाकर भगवान की शरण लेता है, उनके गुणों को आत्मसात् कर लेता है वह जगत पूज्य बन जाता है।

मन के शुचिमय भावों से भर तीर्थ यात्रा हित बढे कदम,
छोड के सब संकल्प-विकल्प को, प्रभु भक्तिमय होवे हम,
भावों से निरपेक्ष रहे और मन में हो आस्था विश्वास,
गुणस्थान की श्रेणी पर चढ, सिद्धशिला पर करें निवास।

तीर्थ हमारी पुरातन संपदा-अनमोल धरोहर-

किसी भी राष्ट्र और समाज के उत्थान में उसका गौरवमयी अतीत एक प्रेरणा स्त्रोत का काम करता है। जिस प्रकार नींव के मजबूत होने पर महल अथवा मकान अधिक समय तक टिका रहता है। उसी प्रकार प्राचीन संस्कृति सभ्यता की नींव पर खड़े तीर्थ जैनत्व को लंबे समय तक गौरवान्वित करते हैं। भारतवर्ष की आध्यात्म धरा ऋषि मुनियों की तपोभूमि है, जिनकी प्रेरणा से व स्मृति में बने तीर्थ हमारे सांस्कृतिक वैभव, अटूट, आस्था एवं भक्ति तथा अप्रतिम कला के उत्कृष्ट प्रतीक हैं। गोपाचल पर्वत पर उकेरी गई सहस्त्रों जिन प्रतिमायें हमारा गौरव थी, देवगढ की यत्र-तत्र बिखरी हुई जिनमूर्तियां वहां के वैभव की कहानियां सुना रही है। तमिलनाडु की जैन स्थापत्य कला की छवि

हमें वहां के जिन मंदिरों में, गुफाओं में उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्तियों में, विशाल रथ, शिखर एवं अनगिन स्वर्णिम दीपमालाओं में दिखाई देती है जो हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है। संक्षेप में कहा जाये तो भारतवर्ष की धर्मधरा पर कितनी ही संस्कृतियां आई और गई पर जैन संस्कृति के प्रतीक तीर्थक्षेत्र के प्रतीक तीर्थक्षेत्र रुप धरोहर सदैव सबके आकर्षण का केन्द्र रही हैं। एक पुरातत्ववेत्ता के अनुसार-संपूर्ण भारतवर्ष में शायद एक भी स्थान ऐसा नहीं होगा, जिसे केन्द्र बनाकर यदि 12 मील व्यास का एक काल्पनिक चित्र खींचा जाये तो उसके भीतर एक या अधिक जैन मंदिर, तीर्थ बस्ती या पुराना अवशेष प्राप्त ना हो। सौंदर्य बोध में अग्रणी, धनिक वर्ग की धार्मिक आस्थान ने ही विशाल उत्कृष्ठ कला के प्रतीक बहुमूल्य स्वर्ण, रजत एवं रत्नों की मूर्तियों एवं मंदिरों एवं मंदिरों की कलाकृतियों को भव्यता व अनमोलता प्रदान की है। चाहे पपौराजी के मंदिर हो अथवा मथुरा, पाटलीपुत्र आदि के स्तूप, चाहे ऐलोरा की भित्तिकला के अनुपम सौंदर्य से युक्त तीर्थ हों अथवा सम्मेदशिखर, अष्टपद, गिरनार, पावापुरी और चंचापुरी जैसे प्रधान 5 निर्वाण क्षेत्र जैन समाज की बहुमूल्य संपदा है, अनमोल धरोहर है जिसकी रक्षा, प्रगति एवं व्यवस्था का दायित्व हम पर हैं-

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर जिन तीर्थ की महिमा लिखी गई
जिसने तीर्थों का वैभव देखा, उसकी नजरें वहीं ठहर गई।
कितनी धार्मिकता, पावनता, उत्कृष्ठ कला, अद्भुत सौंदर्य,
शब्दों में बता पाना मुश्किल, स्वर्गिक वैभव भी लगता तुच्छ।
ध्यान रहे-
अतुल संपदा-क्षय न होवें कदा।

तीर्थक्षेत्रों की स्थिति-

जब हम जैन तीर्थ संरचना संबंधी इतिहास को उठाकर देखते हैं तो हम पाते हैं कि सुरम्य पर्वतमालाओं पर बने, विशाल भू-खण्ड पर निर्मित, अपनी आकर्षक मनोहारी कलाओं से सुसज्जित जैन धर्म, संस्कृति और सभ्यता का संदेश देते तीर्थों के लिये भारतीय इतिहास की कुछ शताब्दियां बहुत दुर्भाग्यपूर्ण रही और उस समय हमारा जैनत्व व जैन संपदा पर कुठाराघात कर नष्ट प्राय: किया गया। धर्म परिवर्तन तथा तीर्थों की ओर उपेक्षात्मक दृष्टि का परिणाम यह हुआ कि हमारी अनमोल धरोहर पर अन्य धर्मावलंबियों ने हक जमा लिया और आज जब हमें ज्ञात हो रहा है कि तिरुपति बालाजी के मंदिर की मूर्ति जैन मूर्ति है अथवा केरल के चौकोर बने सभी मंदिर जैन हैं, वहां के सबरीवाला मंदिर जिसके प्रति देश-विदेश के भक्तों की अप्रतिम श्रद्धा है मूलत: जैन समाज की धरोहर है. गोपाचल की खंडित मूर्तियाँ हमारे नयनों में अश्रु ला देती है। चाहे हमारी उपेक्षा, प्रमाद व लापरवाही के कारण ही आज स्थिति निम्नानुसार दयनीय है-

शाश्वत जन्मभूमि है अयोध्या-हिन्दू-मुस्लिम का संघर्ष
पावन तीर्थ सम्मेशिखर की, पावनता का हुआ है हरण
गिरनारी पर बैठे पण्डे, कुण्डलपूर का चला विवाद
अष्टापद निर्वाण भूमि पर अब अस्तित्व की आई याद।
राजगृही में पुलिस का पहरा, शासन बहरा लगता है
गोपाचल की देख दुर्दशा, नीर आंख से बहता है
कितनी गंवाई हमने संपदा, कितने तीर्थ हुए खण्डित
मौन साधकर क्यों बैठे श्रावक-मुनि विद्वत् पंडित।

तीर्थ क्षेत्रों की ताजा स्थिति-

जैन तीर्थ निर्माण के क्षेत्रों में आज जागृति आई है और अखिल भारतीय स्तर पर तीर्थक्षेत्र, तीर्थरक्षा, तीर्थ संवर्द्धन, तीर्थ संरक्षण तथा तीर्थ जीर्णोद्धार के उद्देश्य को लेकर गठित 20 से अधिक संस्थाओं में उत्साह एवं उमंग की लहरें हिलौर ले रही हैं, कुछकर गुजरने की उत्साहवर्धक तमन्ना ने नेतृत्व के पैरों में गति पैदाकर दी है। तन-मन-धन की त्रिवेणी उत्पन्न परिस्थितियों से टकराने को प्रेरित कर रही है। नेतृत्व में गजब का उत्साह है, जिसे आत्मकल्याण के मार्ग में लगे मुनिराजों और आर्यिका माताजी ने पहचाना है और नेतृत्व का ध्यान जिनशासन की रक्षार्य आकर्षिक किया है। दानदाताओं द्वारा चंचला लक्ष्मी का तीर्थ संरक्षण-संवर्धन हेतु उपयोग करने का भाव, उच्च शिक्षित वर्ग का योग्यतानुसार सहयोग एवं सर्मपण, युवाओं का जोश, महिलाओं की धार्मिक भावना एवं विद्वानों के ज्ञान तथा दिगंबर संतों के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से आज जहां भव्य नवीनतम जिन मंदिर तीर्थ रुप में हमारे गौरव के प्रतीक बन रहे हैं वहीं राजस्थान, महाराष्ट्र, बुंदेलखण्ड, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के अनेकों तीर्थ, तीर्थंकर जन्मभूमियां अपने पुरातन स्वरुप से बाहर निकलकर भव्यतम, शिल्पकला की दृष्टि से अनुपम तीर्थ रुप में परिणत हो गये हैं। जो क्षेत्र पहले दर्शन पूजन करने वालों की बाट जोहते थे आज वहां भक्तों की कतारें लगने लगी हैं। जहां पुजारी व कर्मचारियों को वेतन देना मुश्किल होता था, वहां आज लाखों रुपये दानपेटियों में आने लगे हैं। जहां के मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो रहे थे, जहां मधुमक्खियों, चमगादड़ों के छत्ते बन गये थे, वहां आज जीर्णोद्धार होकर, वेदियों में स्वर्ण काँच आदि का सुंदर कार्य होने से मनोहारी हो गये हैं। जहां पर संत-सदन की क्या कहें मुनिराज के एक या दो दिन ठहरने की भी व्यवस्था नहीं हो पाती थी वहां अब मुनियों के भव्य चातुर्मास होने लगे हैं। जिसे हम एक वाक्य में कह सकते हैं, तरक्की की राह पर कार्यकर्ताओं के उत्साह से

तीर्थ क्षेत्रों की प्रगति तथा व्यवस्था में महिलाओं का योगदान-

तीर्थयात्रा का प्रमुख उद्देश्य होता है अंत:करण की शुद्धि करना जो तीर्थंकर की चरण रज से पवित्र हुए पावन तीर्थ पर स्थापित चरण कमल एवं जिनेन्द्र देव की वंदना, अभिषेक पूजन से प्राप्त होती है। जो तीर्थसदियों से हमें विश्व शांति का संदेश दे रहे हैं वहां जीर्णोद्धार करना आवश्यक है, जो

पुरातात्विक वैभव-कला शिल्प कजे प्रतीक हैं उनका संरक्षण आवश्यक है, जहां सुविधाओं का अभाव होने से यात्रियों का आवागमन अपेक्षाकृत न्यून है वहां संवर्धन की आवश्यकता है।

भारतीय नारी ने सागर की गहराई में डुबकी लगाने से लेकर गगन की ऊंचाई तक अपनी सफलता के परचम फहराये हैं और हमें गर्व है कि ओलंपिक में जो हमें पदक मिले वो महिलाओं की प्रतिभा के ही परिणाम है।प्रतिभा संपन्न महिलाओं की प्रतिभा का यदि तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में उपयोग हो तो तीर्थ-क्षेत्र युगांतर तक ध्वजा फहराते रहेंगे।

जैन तीर्थ विकास व्यवस्था और महिला सहभागिता-

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ से अंतिम तीर्थंकर महावीर जैसे दिव्य शक्तियों को जन्म देने वाली उनके समवशरण में मुनियों और श्रावकों की अपेक्षा अधिक संख्या में उपस्थित होकर नारी ने अपनी महत्ता सिद्ध की है। आज महिलाओं ने घर से बाहर आकर अपने को सिर्फ स्थानीय स्तर पर ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर संगठित किया है और पिछले 20-25 वर्षों में धर्म संस्कृति की रक्षार्थ उनकी सहभागिता समाज के लिये गरिमामय रही है। महिलाओं की सहभागिता हम निम्न शीर्षकों के अंतर्गत देख सकते हैं-

(1) हर महिला का चिंतन तीर्थ क्षेत्र का वंदन-इस हेतु सर्वप्रथम आवश्यक है कि महिलायें अपने परिवार के साथ अपने संगठन के साथ तीर्थ यात्रायें आयोजित करें और वहां जाकर तीर्थ की व्यवस्था संबंधी जानकारी ले एवं तीर्थ क्षेत्र की आवश्यकतानुसार तन,मन, धन से स्वयं भी सहयोग करें व अन्यों को प्रेरित करें।

(2) हर महिला का प्रण-तीर्थ संरक्षण-जब यह प्रतीक हो कि तीर्थ की सुरक्षा खतरे में है तो उसके कारणों को जाने, पता लगाये कि तीर्थों को किस चीज से, व्यक्ति से, संप्रदाय से खतरा है। जो पंथ, ग्रंथ व संतों को लेकर भी पक्ष व्यामोह से हो सकता है, अथवा हमारी लापरवाही का परिणाम भी हो सकता है। यहां महिलाओं को अपनी योग्यता, दबंगता, निर्णय लेने की क्षमता को दिखलाना होगा तथा निष्पक्ष रहकर सुरक्षा की नीति बनानी होगी।

(3) हर महिला का आह्वान- तीर्थ हमारी शान, संगठन हमारी जान-जब प्रत्येक महिला तीर्थ के गौरव को बनाये रखने के लिए दृढ संकल्पित हो जाये और संगठित होकर क्षेत्र पर भोजनशाला व्यवस्था- जिनवाणी संरक्षण व्यवस्था पूजन-सामग्री संयोजन जैसी व्यवस्था को अपने हाथ में लेकर समर्पित भाव से जुट जाये तो तीर्थ क्षेत्र पर यात्रियों का आवागमन बढ जायेगा तथा यात्री तीर्थ विकास के लिये तन,मन,धन से सहयोग हेतु तत्पर हो जायेंगे। मैं की भावना छोड़ो और हम से नाता जोड़े तो हम अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगे।

(4) करें वृक्षारोपण-बचाये पर्यावरण प्रदूषण-तीर्थ क्षेत्रों पर यदि हरितिमा हो तो वहां यात्री अधिक से अधिक मात्रा में जाते हैं। अत: अपने जन्मदिवस, विवाह, वर्षगांठ, पूर्वजों की स्मृति में महिलाये वृक्षारोपण करके पर्यावरण को और अधिक शुद्ध बनाकर प्रदूषण से बचा सकती है और उद्यान आदि का विकास करने में वातावरण को खुशनुमा बना सकती है।

(5) बचत का रखें ध्यान-तीर्थव्यवस्था का हित दें दान- इस कार्य को परिणित करने हेतु महिलायें संगठन के माध्यम से गुल्लक योजना चालू करके राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रसार करें तो तीर्थ की प्रगति में चार चांद लग सकते हैं।

(6) याद रखें हमेशा मन में ना हो द्वेष- प्राय:हर शहर में महिलाओं का संगठन है चाहे वह महासमिति के रुप में हो, महासभा के रुप में हो, परिषद के रुप में हो या महिला संगठन के रुप में प्रत्येक संस्था व्यक्तिगत स्तर पर अपने कार्यक्रम करें कोई हर्ज नहीं, परंतु जब तीर्थों की प्रगति व व्यवस्था की बात हो तो सभी के स्वर एक हो, परिणाम प्रगतिजनक होंगे।

(7) छोड़े वाद- विवाद करें आपसी संवाद-संवाद समाज में आपसी सद्भाव उत्पन्न करता है तथा आपस में प्रेमभाव उत्पन्न होने कुछ तथ्यपूर्ण निर्णय लेने में सफलता मिलती है। वर्तमान पर गौर करके भविष्य को संवा की दृष्टि तीर्थ की प्रगति एवं व्यवस्था का मूल है। सांझी बातचीत से तीर्थों के विकास, प्रगति की राह खुलती है।

(8) प्रतिभा का करे उपयोग-सेवा में दे सहयोग-वे महिलाओं जो चिकित्सक हो, जो पुरातत्व का ज्ञान रखती हो, जो शिक्षण का कार्य करती हैं, जो लेखन में निपुण हो, जिनकी वक्तव्य कला प्रभावी है, वे सभी महिलाये समय-समय पर शिविरादि के माध्यम से, विभिन्न प्रतियोगिताओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को तीर्थ क्षेत्रों पर आयोजित करके अपने विचारोत्ताजक लेखन एवं ओज पूर्ण वक्तृत्व से जन-जन की आस्था को उस तीर्थ की प्रगति से जोड़ सकती है, वहां की व्यवस्था में इंटीरियर, मैनेजमेंट आदि में निपुण महिलाओं की सहभागिता ली जानी चाहिये।

(9) मन में हो मोद-तीर्थ को ले गोद- जिनका मन तीर्थ को देखकर आनंदित होता है वहीं तीर्थ की व्यवस्था में सहभागिता दे सकता है। एक महिला संगठन संकल्पूर्वक एक तीर्थ को गोद ले ले अर्थात् वहां आवश्यकतानुसार औषधालय, भोजनशाला, गुरुकुल व्यवस्था एवं पाठशाला को चलाने का पूरा जिम्मा स्वयं ले जिसमें उसे स्थानीय संस्था के पदाधिकारियों व समाज का सहयोग लेना होगा।

(10) परिवार का पाये प्यार-तीर्थ का करे उद्धार-महिलाओं का प्रयास तभी सफल होता है जब उसे उसके परिवार का प्यार मिले। जब वह अपने परिवार के लोगों का दिल जीत लेती है तो परिवार का सहयोग लेकर तीर्थ क्षेत्र पर कमरों का निर्माण, प्याऊ का निर्माण, जिनवाणी संरक्षण हेतु आलमारियां वगैरह देकर, पूजन हेतु आवश्यक बर्तन आदि उपलब्ध कराकर, मुनियों के आहार आदि की व्यवस्थायें जुटाकर, तीर्थ की व्यवस्था में सुधार करने में योगदान दे सकती है।

(11) रखें पावनता का ध्यान-तीर्थ न बनें पकनिक स्थान- महिलायें ही अपने पारिवारिक सदस्यों को तीर्थ के गौरव से परिचित करा सकती हैं उन्हें

चाहिये कि वे अपने बच्चों में संयम के संस्कार डाले ताकि वे तीर्थ क्षेत्र की शुचिता बनाये रखें वहां पर अभक्ष्य पदार्थों का सेवन ना करें।

(12) रहे दबंग-बने सरकार का अंग-आज जो हमारे तीर्थ क्षेत्र कानूनी केसों में उलझ रहे हैं उनका फैसला लेने के लिये दबाव बनाया जा सकता है। हम अल्पसंख्यक घोषित हुए हैं परंतु उसके कारण मिलने वाली सुविधाओं से अनभिज्ञ हैं इसलिये जैन समाज का प्रतिनिधित्व सरकार में होना आवश्यक है। सरकारी योजना का फायदा कैसे ले एवं अपने तीर्थों के विकास के लिये सरकारी तौर पर क्या करें इसलिये सरकार में महिलाये भागीदारी देकर तीर्थ की प्रगति एवं व्यवस्था में सहभागिता दे सकती हैं।

(13) रुढिवादिता छोड़े, स्वयं को टेक्नॉलॉजी से जोड़े-यह सत्य है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलायें अधिक रुढिवादी होती हैं, यदि महिलायें स्वयं को आधुनिक तकनीकी सुविधाओं के साथ जोड़े तो समस्त तीर्थक्षेत्रों का सुदृढ नेटवर्क तैयार हो जायेगा। तीर्थक्षेत्र के साथ महिला संगठन की एक वेबसाईट बनाये जिसदसे उस क्षेत्र का प्राचीन एवं आधुनिक इतिहास, जानकारी सकल जैन समाज को मिल सके।

(14) निराश्रित व निर्धन का रखे ध्यान- उनके जीवन का हो कल्याण- समाज में जो निराश्रित एवं विधान महिला हैं तो उसे तीर्थ क्षेत्र पर स्थान देकर दैनिक उपभोग की सामग्री की दुकानें डलवा दें अथवा योग्यतानुसार सहयोग लेकर निश्चित धनराशि दीं जाये ताकि उसका जीवनयापन भलीभांति होवे एवं तीर्थ क्षेत्र पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो सके।

(15) दिखाये अपनी दक्षता-रखें तीर्थों पर स्वच्छता- वर्तमान समय में हमारे लिये सबसे अधिक चिंता का विषय बन रही गंदगी और पोलिथीन का कचरा जो तीर्थ का सौन्दर्य भि बिगाड़ता है और पर्यावरण की दृष्टि से भी हानिकारक है। महिलाओं को चाहिये कि वे अपनी जिम्मेदारी को समझें तथा स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत के स्वप्न को साकार करें।

(16) तीर्थ क्षेत्र को बनाये उत्सव का अंग तो बिखरेंगे तीर्थ भक्ति के रंग- कहते हैं पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में उत्सव प्रियता अधिक होती है, जन्मदिवस, शादी की वर्षगांठ आदि को उत्सव रुप से मनाते समय यह विचार करें तीर्थों की प्रगति-व्यवस्था हमारी जवाबदारी है अत: तीर्थ स्थानों पर अपने परिवार सहित जायें भक्ति करें, जिससे हमारे तीर्थों को भी जनबल तथा धन बल मिलेगा।

(17) भामाशाहों से ले दान- करें सार्वजनिक सम्मान-अपरिग्रह के सिद्धात को अंतीमन से पालने वाले हम जैनी जन विशेष रुप से यह ध्यान रखें कि तीर्थ क्षेत्र की व्यवस्था हेतु दानवीरों को प्रेरित करें एवं उनसे प्राण दान राशि का उचित कार्यों में उपयोग करें। यह कार्य महिलाओं के आव्हान से बड़ी कुशलतापूर्वक संपन्न हो सकता है। अन्य दानदाताओं को प्रेरित करने हेतु उनका सम्मान भी करें।

(18) लायें मन में उल्लास- करायें संतो का चातुर्मास-यदि कोई संत तीर्थ क्षेत्र पर चातुर्मास की भावना व्यक्त करे तो महिलाओं की सहभागिता बढ़ जाती है। संतों के चातुर्मास से तीर्थक्षेत्र की रौनक बढ़ जाती है और मुनियों की प्रेरणानुसार कई छोटे-बड़े कार्यों को करने की यहां तक जीर्णोद्धार ओर नवनिर्माण के भी कार्य संपन्न हो जाते हैं। आज सभी महिलायें संकल्पित होकर आगे आये तो उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे।

(19) खिलायें संस्कारों के फूल-बनाये तीर्थों पर गुरुकूल-बालकों को बचपन से धर्म के संस्कारों की शिक्षा मिले इस हेतु तीर्थों पर गुरुकुल व्यवस्था में अपनी सेवायें देकर महिलायें तीर्थ व्यवस्था की व्यवस्था में सहयोग का अंग बन सकती है।

(20) छात्राओं का होवे विकास-बनायें छात्रावास- तीर्थ क्षेत्रों पर महिला संगठनों के माध्यम से समाज से सहयोग लेकर छात्रावास की स्थापना एवं उनके संचालन की व्यवस्था में सहयोग देकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

अंतत: हमें विचार करना है कि जब आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व श्री चामुण्डराय की माता काललदेवी के एक सुस्वप्न से श्रवणबेलगोला में विश्व में आश्चर्य उत्पन्न करने वाली सुंदरतम 57 फीट ऊंची निराधार प्रतिमा खड़ी रहकर संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश प्रसारित कर सकती है, जब वर्तमान युग में गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप तीर्थ की स्थापना होकर सुन्दरता विशाल सुमेरु पर्वत की स्थापना एवं जन-जन के लिये आस्था का केन्द्र बन सकती है, इतना ही नहीं अभी-अभी सन् 2016 में ऋषभगिरि तीर्थ, मांगीतुंगी में भगवान आदिनाथजी की 108 फीट ऊंची विशालकाय प्रतिमा प्रतिष्ठा होकर गिनीज बुक में स्थान प्राप्त कर सकती है तो आज की सक्षम महिलायें तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में भी चार चाँद लगा सकती है बस आवश्यकता है-

मात-पिता और गुरुजनों का लेकर आशीर्वाद
धर्म-समाज ओर परिवार की मर्यादा रखें याद
द्वेष भावना करें तिरोहित बनाये एव संगठन
धर्म सरिता जल से कलश भर तीर्थ का हो वंदन
गौरवान्वित होगा समाज तब, तीर्थ बनेंगें मनोहारी
उषा का प्रकाश फैलेगा, बीतेगी निशा अंधियारी

अंत में
कदमों को दे गति, करें तीर्थ क्षेत्र की प्रगति
सुनेगा जन-जन तीर्थ सौंदर्य कथा-जब महिलायें देंगी व्यवस्था में सहभागिता।

मूकमाटी में आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना

प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर

पिछले अंक से शेष .....

आचार्यश्री ने श, स और ष का विश्लेषण अपने ढंग से किया है। उन्होंने कहा- 'श' कषाय का शमन करने वाला है और शाश्वत शान्ति की पाठशाला है। 'स' सहज सुख का साधन और समता का अजस्र स्रोत है और 'ष' पाप पुण्य से मुक्त करानेवाला अक्षर है। इन तीनों अक्षरों के ध्यान से शारीरिक और आध्यात्मिक कष्ट दूर हो जाते है (मू.मा., पृ.३९८)। ओंकार ध्वनि के रूप में इन्हें श्वास को भीतर रोककर नासिका से निकालते हैं। इस प्रक्रिया से वीतरागता का विकास होता है और आत्मा का सच्चिदानन्द रूप प्रकट होने लगता है।

ओंकार सभी भारतीय परम्पराओं में अहं भूमिका लिये हुए है। जैन परम्परा में वह पंचपरमेष्ठी का द्योतक है। इसमें अरहंत का प्रथम अक्षर अ, सिद्ध अथवा अशरीरी का प्रथम अक्षर अ, आचार्य का प्रथम अक्षर आ, उपाध्याय का प्रथम अक्षर उ, तथा मुनि का प्रथम अक्षर म मिलकर 'ओम्' बन जाता है। यही ओंकार त्रिलोकाकाररूप भी माना गया है। ओंम तीन वातवलयों में वेष्टित पुरुषाकार है जिसके ललाट पर अर्धचन्द्राकार में बिन्दु रूप सिद्ध लोक शोभित होता है। बीचों बीच हाथी की सूँडवत त्रसनाली है। इस ओंकार की उपासना सुदीर्घ साधना का फल है (मू.मा.,पृ. ४०१-४४२) इन मन्त्रों का जप होता है, सस्वर पाठ होता है जिससे आभामण्डल पवित्र होता है और संगीत आस्था को स्थायित्व देने में सहयोग करता है। इसी की समन्विति धर्म की आत्मा है।

धर्म और योग

धर्म जीवन है और जीवन धर्म है। जीवन पवित्रता का प्रतीक है। उसकी पवित्रता संसार के राग रंगों से दूषित हो गई। इसलिए उस दूषण को दूर करने के लिए तथा जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए धर्म का अवलम्बन लिया जाता है। यह अवलम्बन साधन है। साध्य और साधन की पवित्रता धर्म की अन्तश्चेतना है। यह अन्तश्चेतना विवेक का जागरण करती है और जागरण से व्यक्ति नई साँस लेता है। नई प्रतिध्वनि से उसका हृदय गूँज उठता है। गंभीरता, उदारता, दयालुता, सरलता, निरहंकारता आदि जैसे मानवीय गुण उसमें स्वत: स्फुरित होने लगते हैं। जीवन अमृत सरिता में डुबकी लेने लगता है। देश, काल, स्थान आदि की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं और विश्वबन्धुत्व तथा सर्वोदय की भावना का उदय हो जाता है।

जैनधर्म इस दृष्टि से वस्तुत: जीवनधर्म है। वह जीवन को सही ढंग से जीना सिखाता है, जात-पांत के भेदभाव से ऊपर उठकर अपने सहज स्वभाव की पहिचान करने का मूलमन्त्र देता है, श्रमशीलता का आह्वानकर पुरुषार्थ को जाग्रत करता है। विवाद के घेरों में न पड़कर सीधा-सादा मार्ग दिखाता है, संकुचित और पतित आत्मा को ऊपर उठाकर विशालता की ओर ले जाता है, सद्वृत्तियों के विकास से चेतना का विकास करता है और आत्मा को पवित्र, निष्कलंक व उन्नत बनाता है। यही उसकी विशेषता है, यही जैनधर्म है और यही सर्वोदयवाद है।

योगशास्त्र के आचार्यों ने आध्यात्मिक साधना में आयुर्वेद की प्रणाली को अपनाया है। वैद्य रोग के सम्बन्ध में चार बातों को जानना आवश्यक मानता है - रोग का लक्षण, रोग के कारणों का निदान, रोग से मुक्ति का स्वरूप और रोग को दूर करने का उपाय। इसी तरह योगशास्त्र में ज्ञातव्य है- हेय-हेतु, हान और हानोपाय। यहाँ गुरु का साहचर्य भी आवश्यक है। आचार्यश्री ने मूकमाटी में इस प्रणाली को अपनाया है और मुक्ति प्राप्ति मे इन चारों सोपानों पर चर्चा की है। वहाँ गुरु के महत्त्व को और आहार के पथ्य-अपथ्य को भी निर्देशित किया है तो पथ्य का सही पालन हो तो औषध व आवश्यकता नहीं और यदि पथ्य का पालन नहीं हो तो औषध की आवश्यकता नहीं (मू.मा.,पृ.३९७) प्राकृतिक चिकित्सा को अहिंसापरक चिकित्सा पद्धति (मू.मा.,पृ.४०८) बताना भी तथ्य का सूचक है।

आचार्यश्री ने धर्म-अधर्म की बड़ी सुन्दर परिभाषा की है जो अहिंसा की भी व्याख्या व्याहारिक स्तर पर करती दिखाई दे रही है (मूकमाटी, पृष्ठ २७७) आचार्यश्री ने भी धर्म-अधर्म की व्याख्या में यह स्पष्ट कहा है कि दुष्टों का निग्रह नहीं करना शक्ति का दुरुपयोग करना है, अधर्म है (मू.मा.पृ.२७७)। यह व्याख्या परिस्थिति सापेक्ष है, कायरता नहीं, वीरता की निशानी को द्योतित करने वाली है। एक ओर दया का होना जीव-विज्ञान का सम्यक् परिचय माना है (मू.मा.पृ.३७), अहिंसा को उपास्य देवता स्वीकार किया है (मू.मा.पृ.६४) और पदाभिलाषी बनकर पार के ऊपर पदपात न करूं (मू.मा.पृ.११५) का भाव व्यक्त किया है वहीं दुष्टों के निग्रह करने का आह्वान करना एक अहमियत रखता है। अहिंसा की यही यथार्थ व्याख्या संयम का भी यही स्वरूप है।

अपरिग्रह

परिग्रही वृत्ति व्यक्ति को हिंसक बना देती है। आज व्यक्ति-निष्ठा कर्तव्यनिष्ठा को चीरती हुई स्वकेन्द्रित होती चली जा रही है। राजनीति और समाज में भी नये-नये समीकरण बनते चले आये हैं। राजनीति का नकारात्मक और विध्वंसात्मक स्वरूप किंकर्तव्य विमूढ़-सा बन रहा है। परिग्रह लिप्सा से आसक्त असामाजिक तत्त्वों के समक्ष हर व्यक्ति घुटने टेक रहा है। डग-डग पर असुरक्षा का भान हो रहा है। ऐसा लगता है, सारा जीवन विषाक्त परिग्रही राजनीति में उदरस्थ हो गया है। वर्गभेद, जातिभेद, संप्रदायभेद जैसे तीखे कटघरे परिग्रह के सधन साये में स्वतन्त्रता/ स्वच्छन्दता पूर्वक पल-पुस रहे हैं। इस हिंसकवृत्ति से व्यक्ति तभी विमुख हो सकता है जब वह अपरिग्रह के सोपान पर चढ़ जाये। परिग्रहपरिमाणव्रत का पालन साधक को क्रमश:

तात्विक चिंतन की ओर आकर्षित करेगा और तभी समता भाव तथा समविभाजन की प्रवृत्ति का विकास होगा।

मूकमाटी में अपरिग्रह के संदर्भ में अनेक प्रसंग आये हैं। वहाँ ''हम निर्ग्रन्थ पंथ के पथिक हैं/इसी पन्थ की हमारे यहाँ/चर्चा अर्चा प्रशंसा/सदा चलती रहती है'' (मू.मा.पृ. ६४) इन शब्दों में अपरिग्रह का भाव भरा हुआ है। मुँह में राम बगल में छुरी (मू.मा.पृ.७२), कलियुग की पहचान (मू.मा.पृ.८२), राजसत्ता राजसता की राजधानी है (पृ.१०४), में परिग्रह का ही विश्लेषण है। तृतीय खण्ड का प्रारंभ परिग्रह की निन्दा से होता है -(मूकमाटी, पृष्ठ १९२) गणतन्त्र या धनतन्त्र (मू.मा.पृ. २७१), सेठ का रूप-स्वरूप(मू.मा.पृ.३०२), स्वर्णकलश मशाल समान (मू.मा.पृ. ३६७-७१) आदि जैसे प्रसंगों में परिग्रह की निन्दा और निर्ग्रन्थ या अपरिग्रह अवस्था की आ सकता है क्या ?

- क्या बिना इच्छा भी कुम्भकार अपने उपयोग को कुम्भाकार दे सकता है ?
  क्या कुम्भ बनाने की इच्छा निरुद्देश्य होती है ?
  क्या कील और आलोक के समान कुम्भकार भी उदासीन है ?

यह साधारण / जन-गण-मन /निर्णय लेता है / कि / विशाल निखिल का / आख़िर ! / सृष्टा कौन होगा ? / सकल साक्षात्कार / दृष्टा मौन होगा / वही इश्वर-अविनश्वर ना ! / शेष सब गौण होगा / किन्तु यह निर्णय / सत्य रहित / तथ्य रहित/ पूर्णअहित है केवल कल्पना है/ केवल जल्पना है / क्योंकि/ चेतन से अचेतन का उद्‌भव / कैसे हो संभव ?/ क्या संभव है ?/ कभी .... बोकर बीज-बबूल हैं / पाना रसाल ..... रस पूर / भरपूर / और क्या कारण है ? ये ईश्वर ! किसी को बनाते नर /

काव्य में सृष्टि संदर्भित प्रश्नों का समाधान कवि ने बड़े ही प्रभावक ढंग से किया है और फिर ''मूकमाटी'' के आमुख में उन्होंने यह भी कह दिया है कि इन प्रश्नों का समाधान निषेधात्मकता द्वारा ही दिया जा सकता है। निमित्त की इस अनिवार्यता को देखकर ईश्वर को सृष्टि का कर्ता मानना भी वस्तुतत्त्व की स्वतंन्त्र योग्यता को नकारना है और ईश्वरपद की पूज्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाना है (मूकमाटी, मानस-तरंग ळळ)। काव्य के रचयिता आचार्यश्री ने ईश्वर के सृष्टिकर्तृत्त्व का खण्डन अकलंक, विद्यानंद आदि प्राचीन जैनाचार्यों के तर्कों में तर्क मिलाकर किया है .

'मूकमाटी' की ये कतिपय विशेषतायें हैं, जिनका आस्वादन सरस पाठक प्रति पंक्ति में ले सकता है और पा सकता है नया दिशाबोध, जो उसे काव्य सर्जक की आध्यात्मिकता से सराबोर कर देता है। इन विशेषताओं में मूलभूत विशेषता है उपादान-निमित्त कारणों की मीमांसक प्रतिकृति का होना। समूचे महाकाव्य में यह विशेषता दृष्टव्य है। यहाँ माटी-द्रव्य स्वयं कार्यरूप में परिणमन करता है, इसलिए वह उपादान कारण है और उस कार्य में कुम्भकार सहायक है, अत: वह निमित्त कारण है। उपादान कारण तीनों कालों में रहता है। वस्तु में प्रतिसमय उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य होते रहते हैं और कारण-कार्य परम्परा बनी रहती है। प्रत्येक द्रव्य स्वयं ही अपना कारण और स्वयं ही अपना कार्य होता है। अत: निश्चयनय से कारण-कार्य में अभेद है (मूकमाटी, पृष्ठ १८४-१८५)।

इस तथ्य से यह प्रतिफलित होता है कि पदार्थ की पूर्वकालिक अवस्था को कारण और उत्तरवर्ती अवस्था को कार्य माना जाता है। इन दोनों अवस्थाओं में वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। समयसार कलश १५, में एक ही आत्मा को साध्यसाधक भाव या कार्य-कारण भाव रूप से दो कहा है अर्थात् वह कारण भी है और कार्य भी है। उसी को कारण समयसार और कार्य समयसार कहते हैं। इस प्रकार एक ही द्रव्य में उपादानोपादेय भाव होता है। उसके कारण और कार्य में कथञ्चित् भेद और कथञ्चित् अभेद होता है। इसी प्रकार उपादान कारण के समान ही कार्य होता है पर यह ऐकान्तिक नियम नहीं है। अन्यथा मिट्टी के पिण्ड से मिट्टी का ही पिण्ड उत्पन्न होता। अत: घट अपने उपादान कारण मिट्टी के पिण्ड के कथञ्चित् सदृश और कथश्चित् असदृश होता है।

निमित्त का अर्थ साधारणत: कारण माना गया है। उपादान रूप मिट्टी के होते हुए भी कुम्हार रूप निमित्त के बिना घटादि की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। अत: कतिपय विद्वान उपादान की अपेक्षा निमित्त कारण पर अधिक ज़ोर देते हैं। इतना ही नहीं, उपादान के परिणमन को भी निमित्ताधीन मान बैठते हैं। परन्तु यह सही नहीं, ''मूकमाटी'' इसी कथ्य को प्रस्थापित करता है।

''मूकमाटी'' में ''स्व'' और ''पर'' के संवेदन की बात बहुत आयी है। ये वस्तुत: निमित्त के दो भेद हैं। ''स्व'' निमित्त द्रव्य की अन्तरंग शक्ति है और पर निमित्त से वह शक्ति अभिव्यक्त होती है। मछली के चलने में जल निमित्त होता है और मिट्टी को घड़ा बनने में कुम्भकार निमित्त होता है।

निश्चयनय और व्यवहारनय की दृष्टि से आगमों में उपादान-निमित्त की मीमांसा की गई है। कार्य को उत्पन्न करने की कारण-शक्ति का नाम योग्यता है। शाली-बीज में शालि-अंकुर को उत्पन्न करने की योग्यता है। उसमें मिट्टी आदि व्यवहार से निमित्तमात्र ही हैं। उनमें परमार्थत: अंकुर उत्पन्न करने की क्षमता नहीं होती। अकलंकदेव ने निश्चय-व्यवहार नय की दृष्टि से इस पर विचार किया है। तत्त्वार्थवार्तिक में एक स्थान पर (मू. मा.,पृष्ठ २०४) उन्होंने उपादान की मुख्यता और निमित्त की गौणता पर विचार करते हुए कहा - ''मिट्टी के स्वयं घट होने रूप परिणाम के अभिमुख होने पर दण्ड, चक्र, कुम्हार का प्रयत्न आदि निमित्त मात्र होता है क्योंकि दण्ड आदि निमित्तों के होने पर भी यदि मिट्टी कंकर आदि से भरी हो तो स्वयं घट रूप परिणाम के अभिमुख होने से घट रूप नहीं होती। अत: मिट्टी ही बाह्य दण्डादि निमित्तों की अपेक्षा पूर्वक अभ्यंतर में घट परिणाम के अभिमुख होते हुए घट रूप होती है, दण्डादि घट रूप नहीं होते। अन्य स्थान पर तत्त्वार्थवार्तिक में (५.१७.३१) ही उन्होंने उपादान कारण की सामर्थ्य स्वीकार करते हुए भी उसकी अभिव्यक्ति के लिए बाह्य निमित्तों पर ज़ोर दिया है - जैसे मिट्टी घट परिणाम रूप होने के लिए अभ्यन्तर में सामर्थ्य होते हुए बाह्य कुम्भकार, दण्ड, चक्र, सूत्र, जल, काल, आकाश आदि उपकरणों की अपेक्षा पूर्वक घट पर्याय रूप

से प्रकट होती है अकेली मिट्टी कुम्भकार आदि बाह्य साधनों के मिले बिना घट रूप से परिणत होने में समर्थ नहीं है।''

'मूकमाटी' में उपादान-निमित्त को इसी प्रकार के सापेक्षिक कथन के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। बड़ का बीज ही समुचित खाद, हवा, जल, मिलने पर बड़ के रूप में अवतार लेता है (मू.मा.,पृ. ७) चरणों का प्रयोग किये बिना उत्तुंग शिखर का स्पर्शन सम्भव कहाँ है ? (मू.मा.,पृ. १०) स्वयं पतिता, पददलिता माटी जीवन को उन्नत करने का कारण खोजने का अनुनय माँ सरिता से करती है (मू.मा.,पृ. ४-५)। कुशल शिल्पी कुम्भकार कण-कण के रूप में बिखरी माटी को नाना रूप प्रदान करता है (मू.मा.,पृ. २७)। कुम्भकार उसके लिए भाग्य-विधाता है (मू.मा.,पृ.२८)। कार्यकारण व्यवस्था (मू.मा.,पृ. २३०) आदि प्रसंग इस सन्दर्भ में दृष्टव्य हैं।

इस तरह कुम्हार घट का कर्ता है और भोक्ता है - यह व्यवहारनय से तो सही है पर निश्चयनय से तथ्यसंगत नहीं है। जीव पुदगलों को कर्म रूप से परिणमाता है और कर्म भी जीव को अपने रूप परिणमाता है -यह भी व्यवहारत: ही ठीक है।

इसी भ्रम को दूर करने के लिए समयसार का कर्ता-कर्म अधिकार है। वह निमित्त-नैमित्तिकभाव को स्वीकार करता है। 'मूकमाटी' में भी यही प्रस्थापित किया गया है। कुम्हार व्यवहारत: घट का कर्ता है, निश्चय से नहीं, यदि निश्चय से माना जायेगा तो उसकी तन्मयता का प्रसंग उपस्थित होगा। अत: उपादान रूप से पर के कर्तृत्त्व का यहाँ निषेध किया गया है। लकड़ी से कुम्भकार शायद यही कहना चाहता है (मूकमाटी ,पृष्ठ २७२-२७३)।

इसी बात को आचार्यश्री ने सा-रे-ग-म-प-ध-नि इन सप्तस्वरों के आध्यात्मिक अर्थ को देते हुए कहा है कि दु:ख आत्मा का स्वभाव-धर्म नहीं हो सकता वह तो मोहकर्म से प्रभावित आत्मा का विभाव परिणमन मात्र है। नैमित्तिक परिणाम कथंचित् पराये हैं (मू.मा.पृ.३०५)। जीव के परिणाम और पुदगल कर्म के परिणाम में परस्पर में निमित्तमात्रत्व है, कर्ता-कर्म भाव नहीं है। रस्सी से घट को पेट से बाँधकर सेठ नदी पार कर लेता है ''मूकमाटी'' का अभिधेय यहीं समाप्त हो जाता है। उसकी दृष्टि में उपादान कारण को ही कार्य का जनक मानना भूल होगी, निमित्त का सहयोग भी वहाँ आवश्यक है। उपादान मिट्टी ही कार्य रूप कुम्भ में ढलती है, पर तदर्थ कुम्भकार का भी सहयोग आवश्यक है (मूकमाटी, पृष्ठ ४८०-४८१)।

इस प्रकार अध्यात्म और दर्शन के क्षेत्र में यह प्रस्थापित तथ्य है कि व्यवहारनय से ही निमित्त वस्तुभूत है, निश्चय से वह कल्पनामात्र है। विद्यानन्द स्वामी ने भी यही कहा है कि अनेकान्तवादी कथंचित् तादात्म्य रूप में कार्य-कारण भाव स्वीकार करते हैं। कार्य और कारण द्रव्यरूप से एक होते हैं, जैसे मिट्टी रूप द्रव्य से कुशूल और घट कार्य कारण रूप से स्वीकार किये गये हैं। क्रम से होने वाली पूर्व पर्याय और उत्तर पर्याय में एक द्रव्य प्रत्यासत्ति होने से उपादानोपादेयभाव कहा गया है। इस प्रकार का कार्य कारण भाव सिद्धान्त विरुद्ध नहीं है। अत: निमित्त- नैमित्तिक भाव व्यवहार से ही माना गया है, निश्चय नय से नहीं। उपादान के साथ ही निमित्त का सहयोग भी आवश्यक है। आगम जब परमार्थ की बात करता है तो बाह्य साधनों को उपकरण मात्र माना जाता है और आत्मपरिणाम को ही मोक्ष का प्रत्यासन्न कारण स्वीकार किया जाता है। वहाँ वस्तुत: उपादान कारण की प्रमुखता दिखाई देती है, निमित्त की नहीं। पर निमित्त की उपेक्षा भी नहीं हुई है। निमित्त दो प्रकार के हैं - उदासीन और प्रेरक। उदासीन निमित्त धर्मादि द्रव्य हैं और प्रेरक निमित्त का उदाहरण है कुम्भकार। आत्मज्ञान की प्राप्ति में गुरु आदि तो निमित्त मात्र हैं, उसमें तो योग्यता ही साधकतम है। निमित्त को अधिक महत्त्व देना उपादान की शक्ति को अस्वीकार करना है। उपादान का परिणमन निमित्ताधीन नहीं है और न निमित्त का परिणमन उपादान के अधीन है। किसी का भी परिणमन किसी के भी अधीन नहीं है। अनेकान्तात्मक दृष्टि से ही इस सिद्धान्त पर विचार किया जाना चाहिए।

कुम्भ जैनदर्शन के अनुसार एक सत् है, पदार्थ है, द्रव्य है, जो शाश्वत है, अनन्त संभावनाओं से सन्नद्ध है (मू.मा.,पृ.७) जिसमें भूत-भावित और संभावित सब कुछ झलकता रहता है और जहाँ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य कालानुसार अस्तित्व में हैं (मू.मा.,पृ. १८४)। इसका तात्पर्य यह है कि पदार्थ अपना मूल स्वभाव कभी नहीं छोड़ता। इसलिये हर द्रव्यपदार्थ स्वयं ही अपना स्वामी है। उसे कोई बन्दी नहीं बना सकता। फिर भी ग्रहण-संग्रहण का भाव रहता है, जो संसरण का कारण होता है (मू.मा.,पृ. १८५) ''मूकमाटी'' में इस तथ्य का गंभीर विश्लेषण हुआ है।

पुद्गल के लक्षण आगमों में निर्दिष्ट हैं - शब्द, बन्ध, सौक्ष्म्य, स्थौल्य, संस्थान भेद, तम, छाया, आतप, उद्योत, वर्ण, रस, गन्ध और स्पर्श। आचार्यश्री ने 'मूकमाटी' में इन गुणों को कुम्भ में काव्यात्मक ढंग से विश्लेषित किया है। और यह सिद्ध किया है कि ''अग्नि में रस गुण का अभाव है'' यह जिन विद्वानों की मान्यता है, सही नहीं है क्योंकि जब धूम्र का रसास्वादन हो सकता है तो अग्नि का स्वाद रसना को क्यों नहीं मिल सकता है ? (मूकमाटी, पृष्ठ २८१)।

जैनेतर दर्शनों में जहाँ पुद्गल में स्पर्श, रस, गन्ध एवं वर्ण में से कोई भी भिन्न गुण ग्रहण किये हुए हैं, उसी को लक्ष्य कर यहाँ एक साथ चारों गुणों की विद्यमानता दिखलाने हेतु तथा जो अग्नि में रसगुण के निषेधक हैं (यथा सर्वार्थसिद्धि, १/३२/) उनके मत के निरसन हेतु आचार्यश्री ने 'मूकमाटी' में इस प्रकरण को समाविष्ट किया है।

अनेकान्तवाद

निमित्त-उपादान के प्रश्न पर अनैकान्तिक दृष्टि से विचार किया जाना आवश्यक है, इसलिए 'मूकमाटी' में यथास्थान अनेकान्तवाद और स्याद्वाद पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। वैयक्तिक और सामुदायिक चेतना (मू.मा.,पृ.४६७) शान्ति की प्राप्ति के लिए सदैव जी-तोड़ प्रयत्न करती है।

पर शान्ति वस्तुत: बाहर से खोजने की वस्तु नहीं है। वह तो आन्तरिक समता, सहयोग, संयम और समन्वय से उद्भूत आनुभूतिक तत्त्व है, जो समाज के पारस्परिक व्यवहार को निर्मल, स्पष्ट व प्रेममय बना देता है। माया, छल, कपट और प्रवंचना में पली-पुसी ज़िन्दगी अर्थहीन होती है। दानवता के क्रूर शिकंजों में दबे हुए आदर्शों के कंगूरे उस ज़िन्दगी से कट जाते हैं, युद्धों, आक्रमणों और आतंकवादियों की भाषायें सजीव हो उठती हैं, मानसिक शान्ति और सन्तुलन के तटों में बहती आत्मिक शान्ति का सरित्-प्रवाह अपने तटों से निर्मुक्त होकर बहने के लिए उछलने लगता है, एक नया उन्माद मानवता के शान्त और स्थिर क़दमों में आघाती झंझावात पहेल देता है। ऐसी स्थिति में शान्ति का मार्गदृष्टा समन्वय चेतना की ओर पग बढ़ाता है और अपनी समतामयी विचारधारा से अशान्त वातावरण को प्रशान्त करने का प्रयत्न करता है।

अनेकान्तवाद इन सभी प्रकार की विषमताओं से आपादमग्न समाज को एक नयी दिशा-दान देता है। उसकी कटी पतंग को किसी तरह सम्भालकर उसमें अनुशासन तथा सुव्यवस्था की सुस्थिर, मज़बूत और वैचारिक चेतना से सनी डोर लगा देता है, आस्था और ज्ञान की व्यवस्था में नया प्राण फूँक देता है। तब संघर्ष के स्वर बदल जाते हैं, समन्वय की मनोवृति, समता की प्रतिध्वनि, सत्यान्वेषण की चेतना गतिशील हो जाती है, अपने शास्त्रीय व्यामोह से मुक्त होने के लिए अपने वैयक्ति एकपक्षीय विचारों की आहुति देने के लिए और निष्पक्षता-निर्वैरता-निर्भयता की चेतना के स्तर पर मानवता को धूल-धूसरित होने से बचाने के लिए।

''मूकमाटी'' के कवि ने अनेकान्तवाद को अपने जीवन में उतारा है और असन्तोष की आग को अपनी विरागता से शान्त किया है। उसमें कितनी तपन है सद्भाव पाने के लिए और उसका भीतरी आयाम कितना विस्तृत हो गया है इस दिशा में वीतरागता का पराग पाने के लिए, इसे देखिये इन पंक्तियों में (मूकमाटी ,पृष्ठ १४०-१४१)।

आचार्यश्री का यह कथन एक ओर व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना की ऊँचाई को पाने की कटिबद्धता को आश्वस्त करती है तो दूसरी ओर बाहर और भीतर की तपन तथा ज्वालामुखी हवाओं की बात कहकर समाज और व्यक्ति के व्यावहारिक क्षेत्र में व्याप्त कलह की ओर संकेत करती है। सागर में उत्पन्न हुए कलह से कवि को जो वेदना हुई है, वह सागर के लिए एक अपूरणीय क्षति कही जा सकती है। कवि के हृदय में सागर के प्रति अमित प्रेम है, उसकी गुरु-गारवता की ओर भी उसका ध्यान है, पर जब लहर की ओर दृष्टि जाती है तो उसे वह अल्पकालिक लगता है। वह सोचता है, सुख के बिन्दु से ऊबना और दु:ख के सिन्धु में डूबना, जीत से सम्मान होना और हार से अपमान होना, लोभ-क्षोभ होना, यह सब तो ज़िन्दगी में लगा ही रहता है। पर इस दु:ख-क्षोभ-जन्य कलह को, अपनी आन्तरिक वेदना को, कवि ने अनेकान्तात्मक दृष्टि से सोचकर दूर करने का सफल प्रयत्न किया है। इसलिए वह कह उठता है ''यह सब वैषम्य मिट से गये हैं। जब मिला... यह ! मेरा संगी संगीत है ''(मू.मा.,पृ.१४७) लगता है। सागर का प्रसंग सागर में ही समाप्त हो गया है। महाकवि की आन्तरिक साधुता का इससे अधिक अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है ?

इस प्रसंग में स्मरणीय है कि कवि ने अनेकान्तवाद और उसकी सप्त-भंगियों का उल्लेख किया है और ''मेरा संगी संगीत है'' कहकर उसके प्रति गहन आस्था व्यक्त की है (मूकमाटी, पृष्ठ १४६)।

अनेकान्तवाद वस्तुत: सत्य और अहिंसा की भूमिका पर प्रतिष्ठित तीर्थंकर महावीर का एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है जो सर्वधर्म समभाव के चिन्तन से अनुप्राणित है। उसमें लोकहित, लोकसंग्रह और सर्वोदय की भावना गर्भित है। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को दूर करने का अमोघ अस्त्र है, समन्वयवादिता के आधार पर सर्वथा एकान्तवादियों को एक प्लेटफार्म पर ससम्मान बैठाने का मूल उपक्रम है। दूसरों के दृष्टिकोण का अनादर करना और उसके अस्तित्व को अस्वीकार करना ही संघर्ष का मूल कारण होता है। संसार में जितने भी युद्ध हुए हैं, उनके पीछे यही कारण रहा है। अत: संघर्ष को दूर करने का उपाय यही है कि हम प्रत्येक व्यक्ति के राष्ट्रीय विचारों पर उदारता और निष्पक्षता पूर्वक विचार करें। इससे हमारा दृष्टिकोण दुराग्रही और एकांगी नहीं होगा।

ये दार्शनिक मत-मतान्तर हैं, जो शुद्ध एकान्तवादी हैं। वे अपने विचारों में ''ही'' का प्रयोग करते हैं जो दुराग्रह का प्रतीक है, एक दूसरे के विचारों का अनादर है। परन्तु अनेकान्तवादी अपनी विचाराभिव्यक्ति में ''भी'' का प्रयोग करते हैं जो समीचीनता, समादरता, विनम्रता और लोकतन्त्र का प्रतीक है। आचार्यश्री ने ''ही'' और ''भी'' के ''ही'' माध्यम से एकान्तवाद और अनेकान्तवाद की अभिव्यक्ति को स्पष्ट किया है (मूकमाटी, पृष्ठ १७३)।

''ही'' और ''भी'' की इस विभेदक रेखा ने स्याद्वादी धर्म की तात्त्विकता को स्पष्ट कर दिया है, जिसके मानवीय एकता, सहअस्तित्व, समानता और सर्वोदयता विशिष्ट अंग हैं। इन अंगों को कुछ अहंवादी लोग स्वार्थवश वर्गभेद और वर्णभेद जैसी विचित्र धारणाओं की विषैली आग पैदा कर देते हैं, जिसमें समाज की भेड़िया-धसान वाली वृत्ति वैचारिक धरातल से असंबद्ध होकर कूद पड़ती है, गणतन्त्र धनतन्त्र का रूप ले लेता है (मू.मा.,पृ. २७१), उसके सारे समीकरण झुलस जाते हैं। दृष्टि में हिंसक व्यवहार अपने पूरे शक्तिशाली स्वर में गूँजने लगता है, शोषण की मनोवृत्ति सहानुभूति और सामाजिकता की भावना को कुंठित कर देती है। इस दुर्वस्था की सारी ज़िम्मेदारी एकान्तवादी चिन्तकों के सबल हिंसक कन्धों पर है, जिसने समाज को एक भटकाव दिया है, अशान्ति का एक आकार-प्रकार खड़ा किया है और पड़ौसी को पड़ौसी जैसा रहने में संकोच, वितृष्णा और मर्यादाहीन भरे व्यवहारों की लौहिक दीवाल को गढ़ दिया है। अनेकान्तवाद इन लौहिक दीवालों को अहिंसात्मक ढंग से ध्वस्त कर नैतिक चेतना को जाग्रत करता है।

शेष अगले अंक में.....

Rediscovery of Jainism in Tamilnadu - A kaleidoscopic picture

The forgotten history of the sacred Jaina land- brought to you in a series

Dr.Kanaka. Ajithadoss Jain and P. Rajendra Prasad Jain

Construction of Small Shrines for Abandoned Jain Thirthankar Statues in Tamil Nadu by "AHIMSA WALK" - Part - 4

- Jainism – One of the oldest living faiths of Peninsular India, has a hoary of Antiquity dating back to 4th - 3rd century B.C.in Tamil Nadu. It has left intelligible marks on the thought and life of the Tamils. Its wide popularity is illustrated best by the large number of Cave-Resorts of Recluses, Temples, Sculptures, Stone Beds used by Muni's, Paintings, Epigraphical records and Palm leaf Manuscripts found throughout Tamil Nadu.

- In the length and breadth of Tamilnadu. with a noble mission of unearthing the hidden evidences of the existence of Jainism (Samanam), Good Samaritans toil much without any external help, go in search of uncared Thirthankar Idols - Loose Sculptures, Caves, Inscriptions etc. Every month a Thirthankar emerges out from a bush or from Abandoned place, at the base a Tree, on Lake Bund, on the Tank Bund, Agriculture Fields, Mostly where No Jain lives today.

- The credit goes to Thiru Sridharan of Puducherry, who has initiated in January 2014 the **"Ahimsa Walk"** movement modeled on a similar movement called **"Green Walk"** conducted at Madurai where a large number of ancient, sacred, Jaina heritages in the form of hills, caves, sculptures, inscriptions, dilapidated temples, stone beds paintings are present., besides Thiru.Jeeva kumar, Thiru,Nagakumar and other volunteers are involved in the discovery of the abandoned images, traces of jaina settlements, heritage sites etc..

- Ahimsa walk, now a registered body under Tamilnadu registration of societies act 1975 with Prof. Dr. K.Ajithadoss as the president, has grown in to a big movement ; with a clear vision and noble mission Ahimsa walk movement has embarked into creating awareness among not only Jains and but also to non-Jains, heritage enthusiasts, historians, archeologists about the discovery of Jaina heritages, their history, their significance etc.; the local population (invariably non Jains) is invited to join the Ahimsa walk and they are explained about the importance of their place in having heritage treasure in the form of ancient sculpture/s, inscriptions, etc.; their help / duty to protect them. Such information is immediately conveyed to the outside world through the electronic media, including WhatsApp, SMS, YouTube, Email etc. the print media is also effectively made use of to disseminate the discoveries and glories of Jainism in Tamilnadu; till date Ahimsa walk has completed 35 Walks.

- Apart from discovering the abandoned, uncare vandalized, unnoticed Jaina heritages, majority of them Thirthankara images one of the aims of Ahimsa walk is to protect them in a religiously appropriate and suitable way, keeping in mind that those abandoned Thirthankar images are ancient and they were once worshipped by our ancestors; they are our sacred venerable objects of worship; they are the eloquent speakers of the Jaina glory in Tamil land; Ahimsa walk has taken initiatives to find a suitable site, resources to build a small shrine to house the Thirthankara images.

- There are about 120 Thirthankar Statues of 6th – 10th Century AD are lying at various parts of the State and the condition of it, Instilled the minds of few Jains, who came forward to construct the Shrine for it. We could construct the Shrine, approximate size around 6"W X 6"D X 6"H @ cost of around Rs.60,000/- to Rs.1,00,000/-,

- The following locations where the Shrines have been constructed and Prathista of Thirthankar Statues done, with the help of Philanthropists.

  1) **Arcadu :**
     Route: Chennai – Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Madappattu (19) – Peria Sevalai (9) – Marangiyur (11KM) – Go for 10KM in Ayathur Road Via Paiyur to find the Statue deep in to the Agriculture Field of VAO (Maniakar), May not be visible from the Road.

  Coordinates : 11.943889, 79.327778

Donor – Thiru.M.K.Jain - Sarita Jain, Chennai

Amount: Rs.75,000/- **Date of Sthapana :** 28-06-2015

Before **After**

2) Veerapondy :

Route: Chennai -- Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Madappattu (19) – Peria Sevalai (9) – Marangiyur (11KM) – Arcadu (10) – Ayathur Railway Station (8) – Ara(m)kanda Nallur Railway Station (11) – Go for 8KM on Thirukoilur Road to Devanur Koot Road and 2KM on Vettavalam Road to Veerapondy to find the Statue near Panchayat President office / Perumal Koil Junction. **(OR)**

Chennai – Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Vettavalam Police Station (41) on Thiruvanna Malai Road and turn Left for Veerapondy (8)

Coordinates : 12.044778, 79.214917

Donor: Thiru.P. Rajendra Prasad Jain - Rajalakshmi, Chennai

Amount: Rs.65,000/- **Date of Sthapana :** 28-06-2015

Before **After**

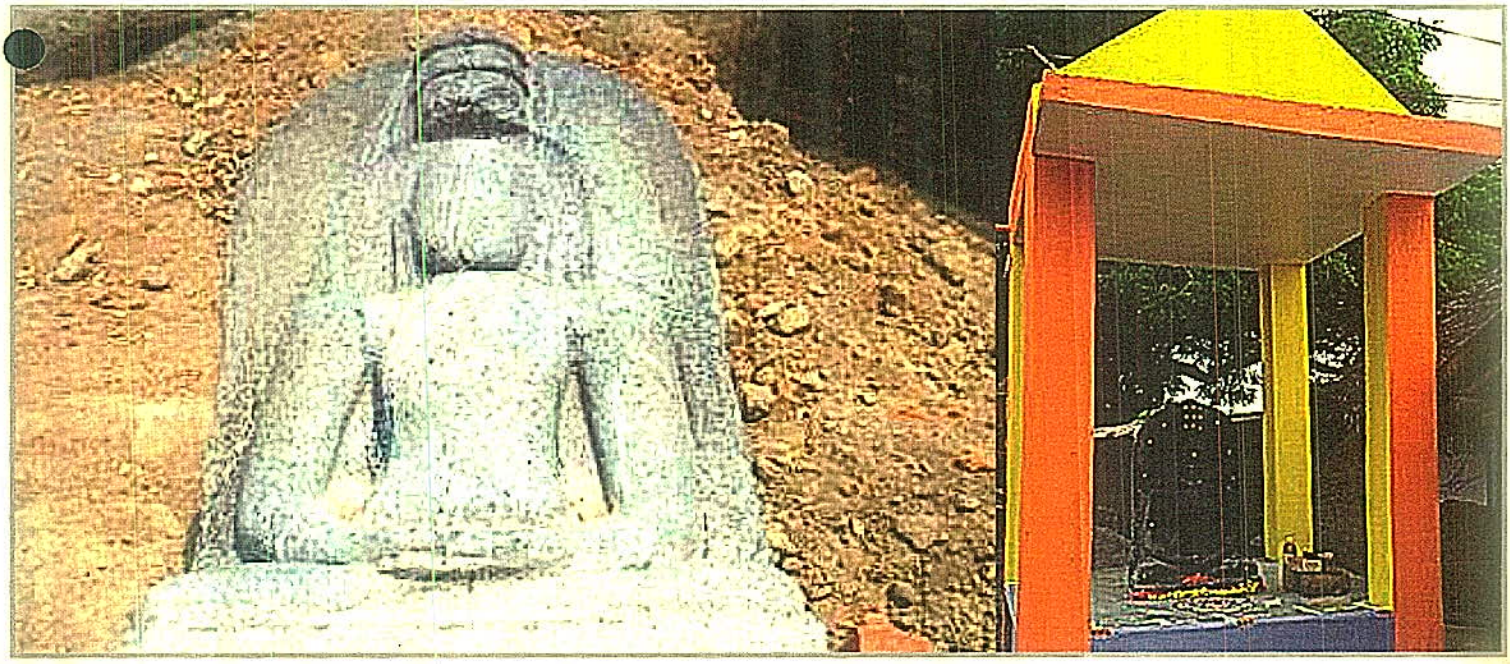

3) Marangiyur : Chennai – Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Madappattu (19) – Peria Sevalai (9) – Go for 8KM on Thiruvennai Nallur to Enathi Mangalam Road and Turn Left near Banyan Tree & Bus Stop and Go for 3KM to find the Statue.

Coordinates : 11.916583, 79.366306

Donor: Thiru.G.Appandairajan Jain – Malliga Rajan, Chennai

Amount: Rs.65,000/- **Date of Stapana :** 28-06-2015

Before **After**

4) T.Kolathur – Chennai – Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Madappattu (19) – Peria Sevalai (9) – Go for 7KM and Turn Left and Go for 2KM to find the Statue

Coordinates: 11.854306, 79.301778

Donor: Thiru.C.Jeevagan Jain - Vasuki, Birudur

Amount: Rs.65,000/- **Date of Stapana :** 28-06-2015

Before **After**

5) Badhur : Chennai – Tindivanam (120) – Villupuram (32) – Madappattu (19)
Go for 18KM and Turn Right before Ulundurpet Toll gate and go for 2KM to find the Statue,
Coordinates: 11.737168, 79.339536
Donor: Thiru.Ananthapadman Jain - Ananda Saraswathi, Chennai
Amount: Rs.65,000/-
Date of Stapana : 28-06-2015

After

6) Pathirapuliyur – Chennai – Tindivanam (120) – Kootteripattu (10) – Sendoor (4) – Turn left go for a KM and Turn Right, Go for 2KM to find the Statue.
Coordinates: 12.096999, 79.590948
Donor: Thiru.K.C.Chandrakumar Jain - Dharmasree, Chennai
Amount: Rs.65,000/- **Date of Sthapana :** 28-06-2015

Before **After**

7) Avanipur : 115Kms from Chennai city and 25 Kms from TINDIVANAM town, 10 Kms inside CHENNAI - TRICHY NH 45 Coordinates : 12.277286, 79.818756

Donor: Thiru.P.Bahubali & Tmt.Vazuki

Amount: Rs.30,000/- **Date of Stapana :** 28-06-2015

Before **After**

8) Eeralacherry : 3KM from Kaveripakkam on Chennai to Bangalore Highway – NH4 in Vellore District, Coordinates : 12.907861, 79.490417

Donor: Sri.Mahendra Kumar Dhakda, Chennai

Amount: Rs.2,00,000/- **Date of Stapana :** 28-06-2015

Before **After**

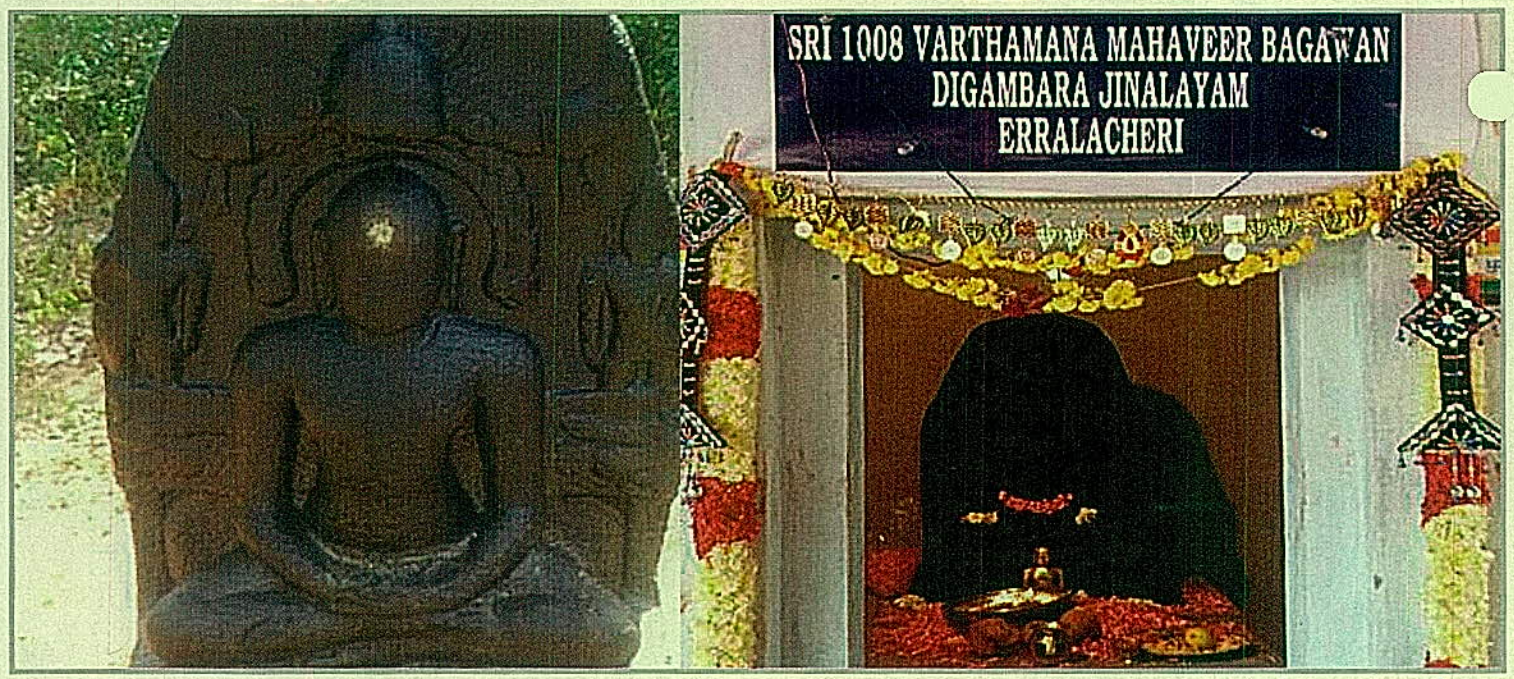

to be continued.....

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी

शान्तिलाल जैन (जांगड़ा)

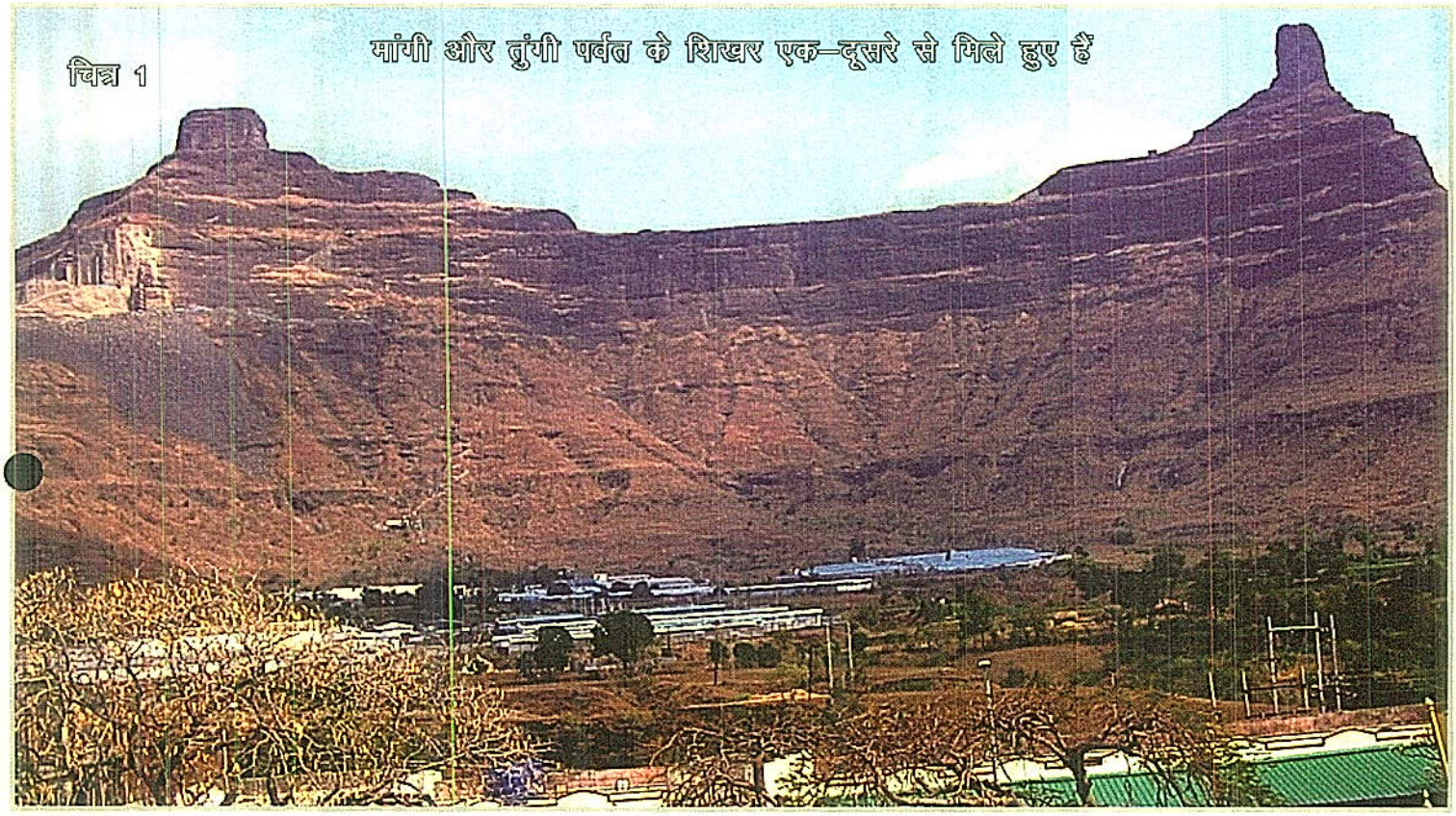

महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत नासिक जिला के सटाणा तहसील में अवस्थित मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र जैन पुरातत्व की दृष्टि से एक सुप्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थ है। इस तीर्थ को दक्षिण भारत का सम्मेदशिखर माना जाता है। यह तीर्थ धुले–सूरत राष्ट्रीय राजमार्ग (एन एच 6) और उससे आगे पिंपलनेर ताहराबाद प्रान्तीय राजमार्ग (एन–एच 7) पर अवस्थित है। इस पर्वत पर दो शिखर हैं। यह पर्वत समुद्र तल से 4366 फुट ऊंचाई पर स्थित है। इसकी वंदना हेतु भक्तजन पुरातन काल से 3500 सीढ़ियों के द्वारा पैदल अथवा डोली से जाते हैं। गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से यहां अखंड पाषाण में विश्व की सबसे ऊंची 108 फुट उत्तुंग दिगम्बर जैन प्रतिमा का निर्माण हुआ है। इस प्रतिमा को 'गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स' में सबसे विशाल जैन प्रतिमा के रूप में सम्मिलित किया गया है। इससे इस तीर्थ की प्रसिद्धी और बढ़ गई है।

प्राकृत निर्वाण कांड में इस तीर्थ के बारे में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है:–

"राम हणू सुग्गीवोगवय गवक्खो य नील महनीलो।
णव णवदी कोडीओ तुंगीगिरि णिव्वुदे वंदे।।8।।

अर्थात राम, हनुमान्, सुग्रीव, गवय, गवाक्ष, नील और महानील आदि 99 करोड़ मुनिराजों ने तुंगीगिरि से निर्वाण प्राप्त किया। उनकी मैं वंदना करता हूँ। संस्कृत निर्वाण भक्ति में आचार्य पूज्यपाद द्वारा बलभद्र (राम) का निर्वाण तुंगीगिरि से होना लिखा है। उत्तरकालीन भाषा कवियों ने भी राम आदि मुनिराजों के निर्वाण क्षेत्र के रूप में मांगीतुंगी का उल्लेख किया है। विभिन्न आचार्यों ने राम आदि की निर्वाण भूमि का नाम तुंगीगिरि दर्शाया है। मांगीतुंगी नाम नहीं दिया है। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस पर्वत का नाम तुंगीगिरि था। मांगी और तुंगी एक ही पर्वत के दो शिखर हैं, जो एक–दूसरे से मिले हुए हैं (चित्र 1)। इस क्षेत्र की वंदना हेतु जाने पर एक स्थान पर जहां बलभद्रजी की चरण छतरी बनी है वहां से इन दोनों ही शिखरों का समीप से मनोरम दृश्य देख सकते हैं (चित्र 2 एवं 3)। मांगी और तुंगी शिखरों के पृष्ठ भाग में मंगन और तुंगन नाम के दो गांव हैं। उत्तर पुराण में राम की निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर को माना है परंतु अन्य जैन पुराणों में तुंगीगिरि को ही भगवान राम

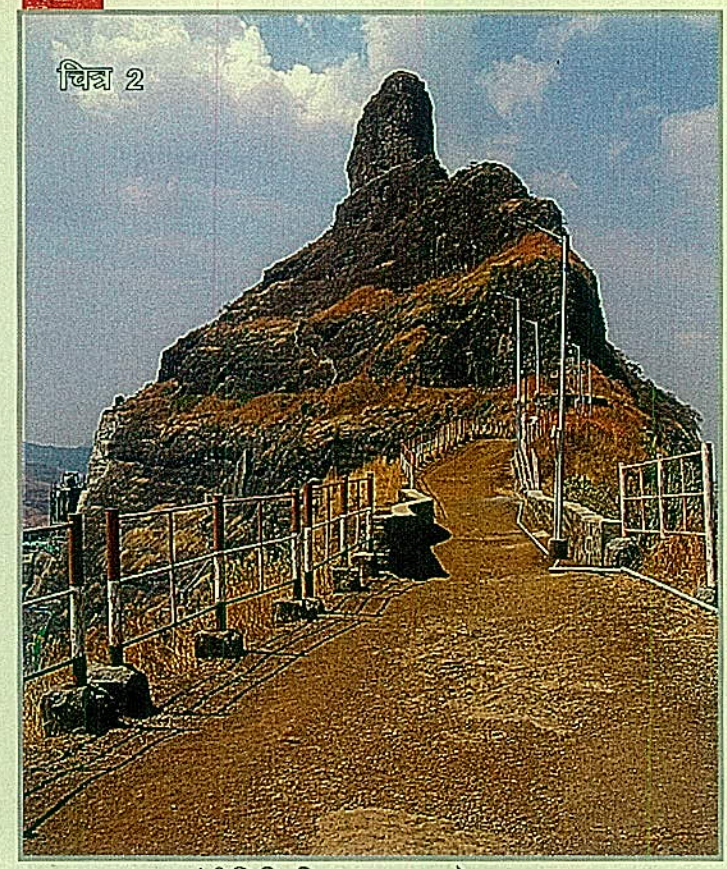

मांगीगिरि शिखर का मनोरम दृश्य

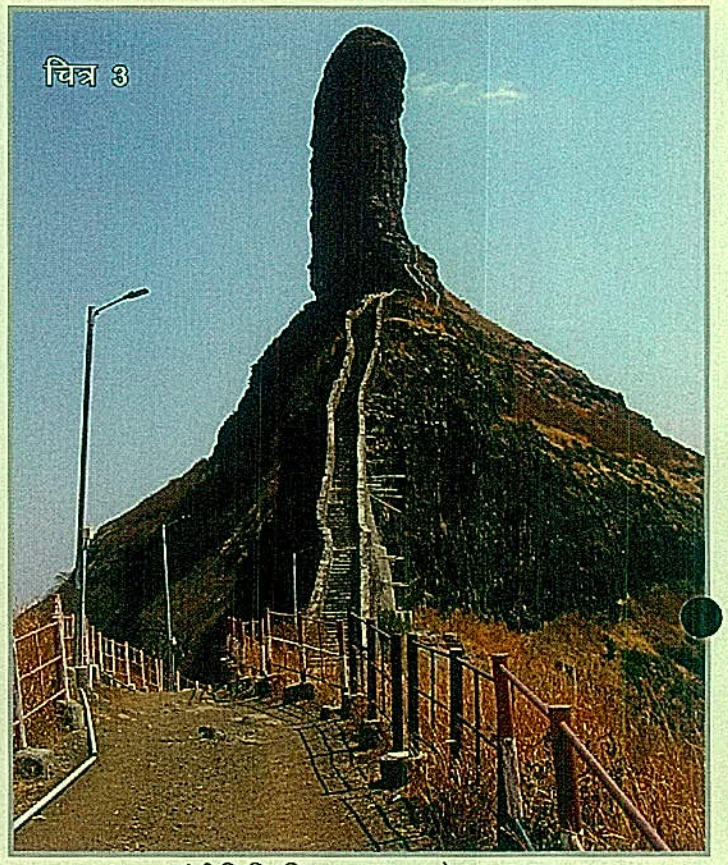

तुंगीगिरि शिखर का मनोरम दृश्य

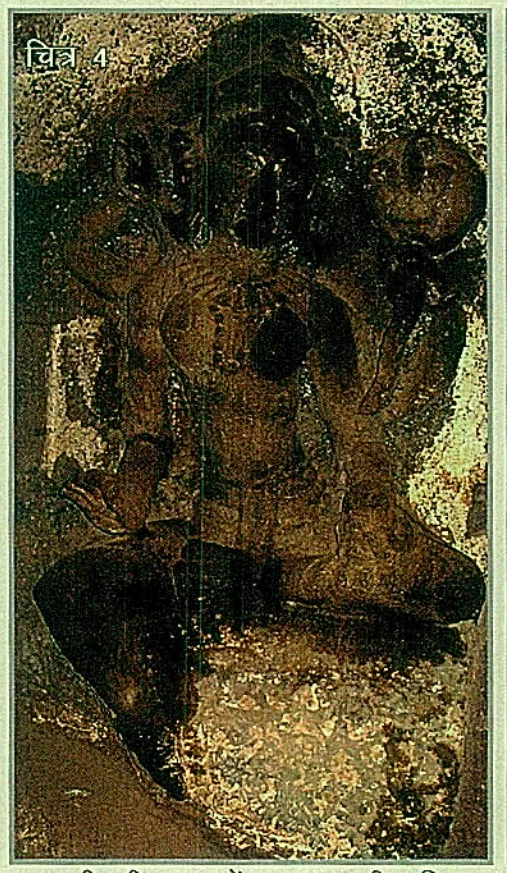

बुद्धजी की गुफा में शासन यक्षी प्रतिमा

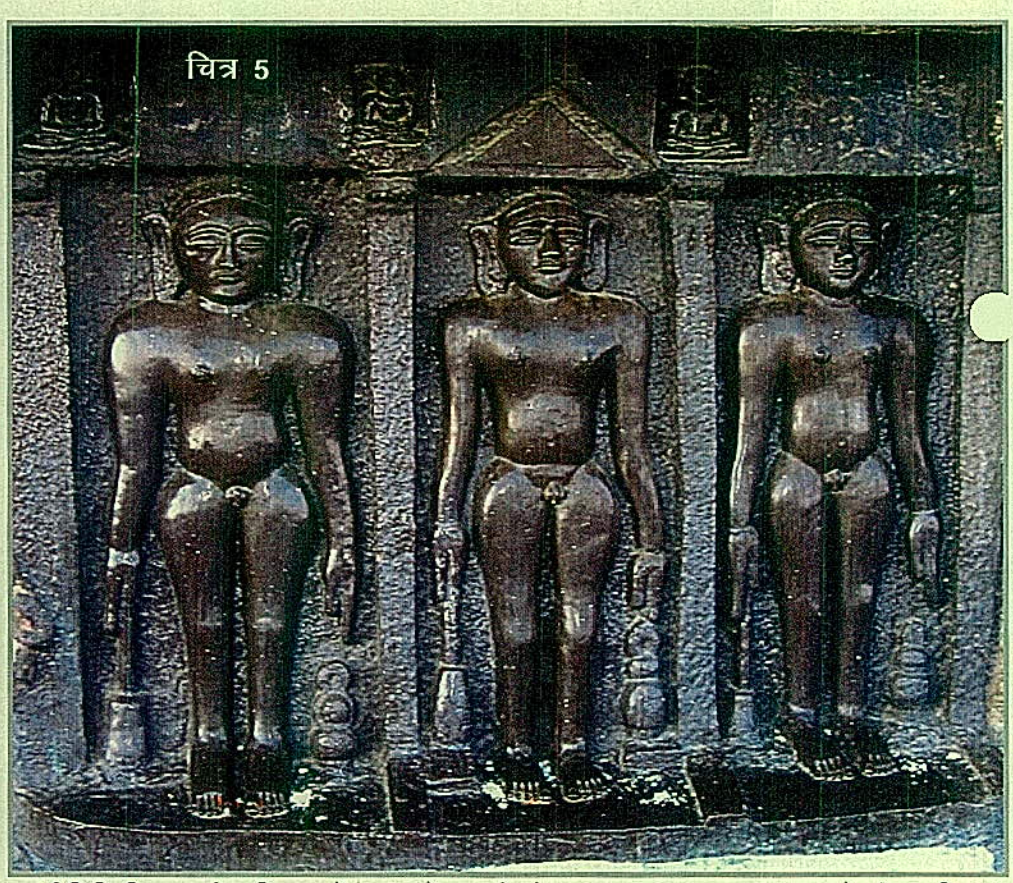

मांगीगिरि शिखर की परिक्रमा में प्रारंभ में पहाड़ी के पाषाण पर खड़गासन मुद्रा में तीन प्रतिमाएं

की निर्वाण भूमि के रूप में माना है।

भगवान राम के निर्वाण स्थल के रूप में इस तीर्थ की प्रसिद्धि के अतिरिक्त महाभारत काल से संबद्ध एक कथानक भी इस तीर्थ से जुड़ा हुआ है। नारायण कृष्ण अपने ज्येष्ठ भ्राता बलराम के साथ द्वारकापुरी के भस्म हो जाने पर कौशाम्बी के वन में पहुचें। नारायण कृष्ण को जोर की प्यास लगने पर भाई बलभद्र जल ढूंढने चल दिये। थकान के कारण कृष्ण को नींद आ गई। उस समय उनके सौतेले भाई जरत्कुमार उधर से निकले। कृष्ण के हिलते हुए वस्त्र को हिरन समझकर जरत्कुमार ने तीर चला दिया। उस तीर से नारायण श्री कृष्ण की मृत्यु हो गई। बलराम जब जल लेकर लौटे तो उन्होंने श्री कृष्ण को देखा। वह यह मान नहीं पा रहे थे कि श्री कृष्ण का निधन हो गया है। वह उनकी मृत देह को अपने कन्धे पर रखकर घूमते रहे। छः माह व्यतीत हो जाने पर उन्हें विश्वास हो पाया कि उनके प्रिय भ्राता का निधन हो गया है। उन्होंने तुंगीगिरि पर अपने भ्राता का दाह संस्कार किया। उसके बाद बलरामजी को वैराग्य हो गया। उन्होनें मुनि दीक्षा लेकर घोर तप किया और वहीं से स्वर्ग सिधार कर पंचम स्वर्ग में ऋद्धिधारी देव हुए।

उत्तर भारत में भयंकर दुर्भिक्ष हो जाने पर अन्तिम श्रुत केवली आचार्य भद्रबाहु का अपने विशाल संघ के साथ इस क्षेत्र पर भी आगमन होने की मान्यता है। श्री भद्रबाहु की स्मृति स्वरूप उनकी एक ध्यानस्थ प्रतिमा मांगीगिरि की गुफा में विराजित है। मांगीतुंगी पर्वत पर कई गुफाएं हैं, जिनमें जैन तीर्थंकरों एवं पिच्छी कमंडलुधारी मुनिराजों की अनेकों प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। ये प्रतिमाएं दिगम्बर जैन मुद्रा वाली हैं। इस पहाड़ी पर गुफाओं के रूप में तीन स्थानों पर पुरावशेष विभक्त हैं। ये हैं – शुद्धबुद्धजी, मांगीगिरि एवं तुंगीगिरि। इन तीनों स्थानों से संबंधित कुछ विवरणों को यहां आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। कुछ गुफाओं एवं उनमें उत्कीर्ण कुछ प्रतिमाओं के नाप, उनकी संख्या आदि के विवरण पं. बलभद्र जैन द्वारा प्रस्तुत किये गये विवरणों के आधार पर प्रस्तुत किये गये हैं।[1]

शुद्धबुद्धजी गुफा समूह – वंदना हेतु यात्रा प्रारंभ करने पर 250 सीढ़ियों को चढने के बाद नवग्रह समूह के समीप शुद्धबुद्धजी नामक गुफा समूह है। पहली गुफा के गर्भगृह में श्री मुनिसुव्रतनाथजी की तीन फुट ऊंची प्रतिमा विराजित है जो पद्मासन् एवं ध्यानमुद्रा में है। इस गुफा में इसके अतिरिक्त 8 प्रतिमाएं गुफा के अंदर और बाहरी भाग में दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। हॉल के मंडप में सरस्वती और लक्ष्मी की प्रतिमाएं बनी हैं। दूसरी गुफा में 5 फुट 4 इंच अवगाहना की तीर्थंकर नेमिनाथजी की श्याम वर्ण पद्मासन प्रतिमा वेदी पर विराजमान है। इसके अतिरिक्त 19 प्रतिमाएं तीर्थंकर एवं शासन देव–देवियों आदि की दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। इस गुफा में शासन यक्षी की एक प्रतिमा सिलवटोंदार परिधान, मुकुट, झुमके, मनकों का हार, चुडियों आदि के साथ उत्कीर्ण दिखाई देती है। (चित्र 4)। शुद्धबुद्धजी की गुफाओं की मूर्तियां प्राचीन हैं और घिस गई हैं। नवग्रह चरण युग्म पट्ट संगमरमर से बना है।

मांगी शिखर – 2500 सीढ़ियों के पश्चात् पहला शिखर मांगी पहाड़ी के पश्चिमी भाग निचले स्तर से लगभग 1200 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। शुद्धबुध्द्धजी की गुफाओं से आगे जाने पर एक पाषाण निर्मित द्वार मिलता है। यहां से बायीं ओर का रास्ता मांगी पर्वत की ओर तथा दायीं ओर का रास्ता तुंगी पर्वत की ओर जाता है। पहले मांगी पर्वत की ओर जाते हैं। कुछ सीढियां चढने के बाद एक स्थान पर सीताजी की गुफा बनी है। यहां खुली गुफा में दो चरण चिन्ह बने हैं। यह मान्यता है कि यहां सीताजी ने आर्यिका रूप में तपस्या की थी। उसकी स्मृति में यहां चरण चिन्ह स्थापित किये गये हैं। मांगीगिरि के ऊपरी हिस्से के ठीक नीचे शिखर के आसपास परिक्रमा पथ गुफा बनाये जाने के क्रम में बना है। मांगी पहाड़ी पर लघु शैलाश्रय, मूर्तियां सीधी और खुली सतह, इस तरह की यहां सात गुफाएं हैं। मांगी शिखर की परिक्रमा प्रारंभ होने पर कुछ चरण चिन्ह बने हैं। जिसके बाद पहाड़ी के पाषाण पर तीन प्रतिमाएं खड़गासन मुद्रा में उत्कीर्ण हैं (चित्र 5) तथा 12 युगल चरण चिन्ह बने हैं। इस स्थान पर 'श्री दिगम्बर जैनाचार्यों की प्रतिमाएं व चरण' शब्द उत्कीर्ण किये हुए हैं। इसके आगे जाने पर जो प्रतिमा है उसके दोनों ओर बने घेरे के ऊपरी और दायें–बायें भाग में 'दिगम्बर जैन गुफा कृतान्तवक्र मांगीगिरि' लिखा है (चित्र 6)। कृतान्तवत्र (अपरनाम कृतान्तवक्र) शत्रुघ्न की सेना में श्री राम द्वारा नियुक्त सेनापति थे। इन्होंने ही श्री राम की आज्ञा से सीता को सिंहनाद नाम की निर्जन अटवी में छोड़ा था। अयोध्या में आये सकलभूषण मुनि से कृतान्तवक्त्र ने निर्ग्रंथ दीक्षा धारण की।[2]

इसके आगे महावीर मंदिर गुफा है। इस गुफा में पलस्तर करवा कर और टाइल्स लगवाकर कमरे का रूप दिया गया है। इसमें मूलनायक भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा है। इसकी अवगाहना 3 फुट 3 इंच है। मूर्ति के ऊपर लेप किया हुआ है। मूर्ति के पीठासन पर लेख और लांछन नहीं हैं। प्रतिमा पाशाण पर उकेरी गई है। मूलनायक प्रतिमा के बायीं ओर की

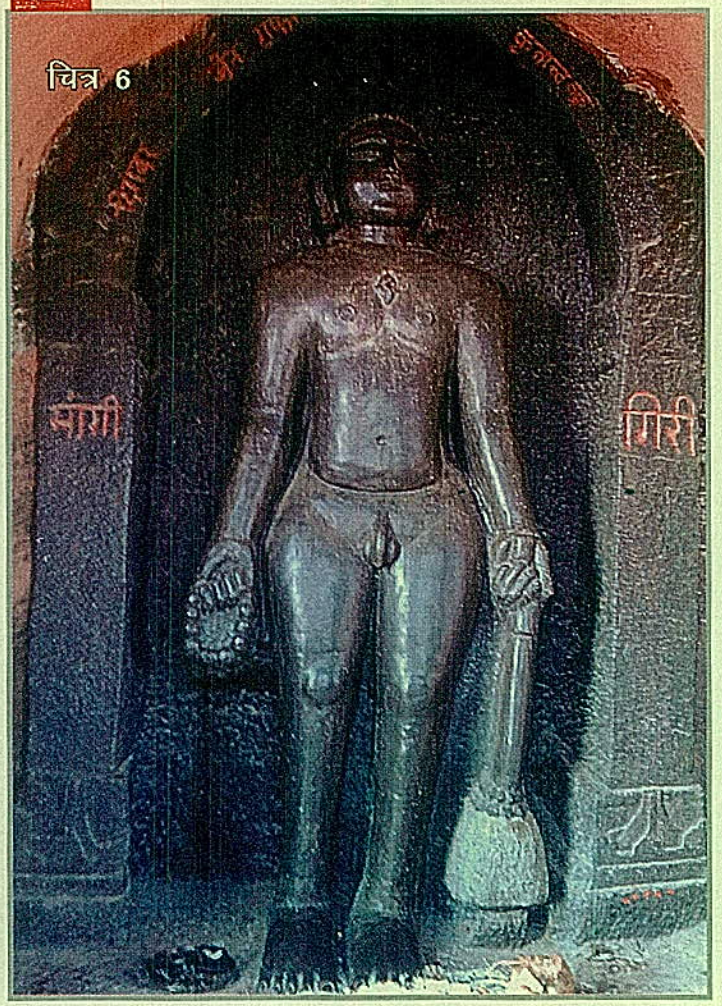

मांगीगिरि की परिक्रमा में कृतांतवक मुनि की प्रतिमा

मांगीगिरि पर बलभद्र मुनि की प्रतिमा एवं चरण चिन्ह

मांगीगिरि की आदिनाथ गुफा में विराजित मूलनायक प्रतिमा

मांगीगिरि की शांतिनाथ गुफा में विराजित मूलनायक प्रतिमा

दीवार में 1 फुट 1 इंच ऊंची 4 पद्मासन प्रतिमाएं दीवार पर उत्कीर्ण की हुई हैं। दो आलों में भी इतनी ही बड़ी प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गई हैं। इस गुफा मंदिर से आगे जाने पर पहाड़ की दीवार में 8 प्रतिमाएं तीर्थंकरों तथा यक्ष–यक्षियों की उत्कीर्ण हैं। इससे आगे जाने पर एक बरामदा है। दीवार में एक ओर 4 फुट ऊंची और बायीं ओर 2 फुट 3 इंच ऊंची प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। आगे शिला में 2 फुट ऊंची तथा उसके पार्श्व में कायोत्सर्ग मुद्रा में एक साधु प्रतिमा है। उससे ऊपर एक पाषाण शिला में चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमाएं हैं। यहां एक प्रतिमा श्री कृष्ण के भाई बलराम मुनि की है जिसकी पीठ दिखाई देती है (चित्र 7)। बलभद्रजी की प्रतिमा के आगे और सामने से दायीं ओर बलभद्रजी के चरण चिन्ह बने हैं। बलराम मुनि की प्रतिमा के सामने से बायीं ओर देवेन्द्रकीर्ति मुनि की प्रतिमा है।

जब देव द्वारा समझाने पर बलराम को यह विश्वास हो गया कि उनके प्रिय भाई का निधन हो चुका है तो उन्हें इस असार संसार से वैराग्य हो गया। उन्होंने इस दुनियां से मुख मोड़ लिया और मुनि दीक्षा ले ली। दुनियां की ओर पीठ किये यह प्रतिमा बलराम की उसी अवस्था का बोध कराती है। बलराम प्रतिमा के समीप एक पट्ट लगा है उसमें इस आशय का लेख है कि बलराम मुनि अवस्था में आहार चर्या हेतु जाते हैं तो महिलाएं उनके सुंदर रूप को देखने में तल्लीन हो जाती हैं। वे पानी भरने के लिए बाल्टियों और मटकों के स्थान पर नन्हें बच्चों को लेकर जाती हैं तथा रस्सी का फंदा बच्चों के गले में बांधकर कुए में डालने लगती हैं। यह दृश्य देखकर बलराम मुनि ने अपने रूप छिपाने हेतु गांव की ओर पीठ कर दी और पहाड़ की ओर मुंह करके बैठ गये। इसी कारण उनके दर्शन पीठ के होते हैं।

बलराम मुनि की गुफा के बाद आदिनाथ मंदिर गुफा है। इसमें भी पलस्तर कर कमरे का रूप दिया गया है। दायीं ओर से बायीं ओर भगवान आदिनाथ की 4 फुट 6' इंच ऊंची पद्मासन प्रतिमा है (चित्र 8)। आगे दीवार में 20 पद्मासन प्रतिमाएं हैं जिनमें एक खड्गासन है। वेदी के मध्य में एक शिलाफलक में पार्श्वनाथ प्रतिमा है जिसके दोनों पार्श्व में चमरवाहक हैं। नीचे दो पद्मासन और दो खड्गासन तीर्थंकर प्रतिमाएं हैं। इसके आगे 28 पद्मासन अर्हत् प्रतिमाएं तथा 10 कायोत्सर्ग साधु प्रतिमाएं हैं। गुफा के मध्य में दीवार है जिसमें 7 अर्हन्तों की पद्मासन और 6 साधुओं की कायोत्सर्ग मुद्रा में दीवार के तीन ओर प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। कुछ मूर्तियों के साथ कुछ लेख भी उत्कीर्ण हैं। इसके आगे नंदीश्वर गुफा है। इसके मध्य में एक चैत्य तथा अंदर दीवार में चार प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। उसके बाद शान्तिनाथ गुफा में भगवान श्री शान्तिनाथजी की मूलनायक प्रतिमा है। इसमें तीन ओर 20 अर्हत् प्रतिमाएं और 7 साधु प्रतिमाएं हैं। गुफा की बाहरी दीवार पर भी अर्हत् एवं साधु प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। इसके आगे पार्श्वनाथ मंदिर गुफा है। इसमें तीन ओर 47 पद्मासन अर्हत् प्रतिमाएं और 13 खड्गासन साधु प्रतिमाएं हैं। मध्य में 2 फुट 10 इंच ऊंची पार्श्वनाथ प्रतिमा है। आगे अर्धमंडप है। उसके मध्य में 5 फुट 3 इंच ऊंची क्षेत्रपाल की मूर्ति है, पास में कुंड है। आगे पहाड़ की दीवार में 40 प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। बाद में परिक्रमा पथ है। पर्वत की दीवार में 24 तीर्थंकर मूतियां और साधु मूर्तिया हैं। एक कोने पर चरण चिन्ह बने हैं।

तुंगी शिखर – मांगी शिखर से उतरकर पाषाण द्वार पर आते हैं। वहां से दायीं ओर का मार्ग तुंगी शिखर की ओर जाता है। कुछ रास्ता पार करने के बाद बलभद्रजी की चरण छतरी बनी है। तुंगीगिरि पर्वत पर प्रथम गुफा पर गुफा नं. 8 महानील गुफा लिखा है। गुफा में एक पट्टिका पर रामचन्द्र (पद्म भगवान) लिखा है। इस गुफा का आकार 9 फुट x 9 फुट है। गुफा में वेदी पर 3 प्रतिमाएं विराजमान हैं। वे तीनों ही 2 फुट 3 इंच अवगाहना की हैं। मध्य में रामचन्द्र, बायीं ओर दीवार में नील और गवाक्ष तथा दायीं और दीवार में सुडील और गव अर्हन्त की प्रतिमाएं हैं। सभी प्रतिमाएं पद्मासन मुद्रा में हैं। महानील गुफा के समीप ही चन्द्रप्रभ गुफा है। यह गुफा 18 फुट लम्बी और 12 फुट चौड़ी है। यहां वेदी पर भगवान चन्द्रप्रभ की 3 फुट 3 इंच ऊंची पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। गुफा की दीवारों में तीन ओर 17 प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। गुफा के बाहर दायीं ओर पहाड़ की दीवार में ललितासन में एक यक्षी उत्कीर्ण है। इसके ऊपर बने हुए कोष्ठक में तीर्थंकर प्रतिमा है। यहां दीवार पर उत्कीर्ण यक्षी की एक प्रतिमा है, जिस पर लेप नहीं है, इससे इसकी प्राचीनता का आभास होता है (चित्र 9)। कुछ आगे पर्वत शिला में पार्श्वनाथ और एक अन्य तीर्थंकर प्रतिमा है। इन गुफा मंदिरों के बाद पंचबालयति गुफा है। इस गुफा में 5 बालयति तीर्थंकर की खड्गासन प्रतिमाएं विराजित है। तुंगी शिखर के चारों ओर भी परिक्रमा पथ बना है।

दोनों शिखरों और शुद्धबुद्धजी की गुफा में उत्कीर्ण मूर्तियां प्राचीन हैं। इनका निर्माण काल 7वीं–8वीं शताब्दी माना

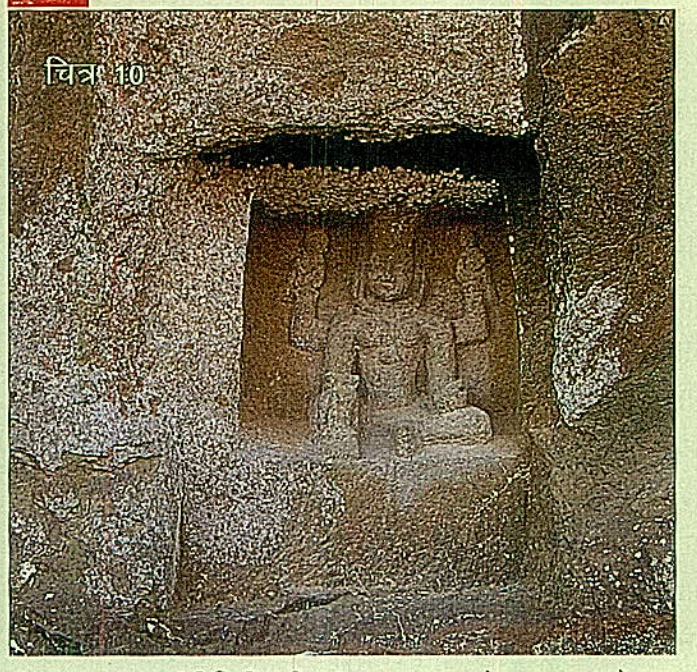

तुंगीगिरी की चंद्रप्रभ गुफा के बाहर आगे दीवार पर उत्कीर्ण यक्षी की प्राचीन प्रतिमा।

जाता है। कई मूर्तियों की छाती पर श्री वत्स नहीं हैं। इनके पादपीठ पर लेख ओर लांछन भी नहीं हैं। इन मूर्तियों के निर्माण की शैली गुप्त काल से पूर्व की मानी गई है। मांगीतुंगी पर्वत और यहां की गुफाओं में उत्कीर्ण की गई अनेक प्रतिमाओं आदि से ज्ञात होता है कि इनके माध्यम से जैन पुराण ग्रंथों के कई आख्यानों को भी यहां दर्शाया गया है। इस बारे में विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। गुफाएं प्राकृतिक हैं। गुफाओं में पलस्तर करवाकर कमरों का रूप दे दिया है तथा कई मूर्तियों पर लेप करवा दिया गया है। इससे गुफाओं और मूर्तियों की सुरक्षा बढी है, परन्तु गुफाओं का अपने प्राकृतिक रूप में अधिक महत्व था। गुफाओं की तरह लेप की हुई प्रतिमाओं में भी प्राचीनता का आभास नहीं होता है। जैन समुदाय को इस तीर्थ के समुचित संरक्षण के प्रति निरंतर सजग रहना होगा।

भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा – गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से निर्मित विशाल प्रतिमा (चित्र 10) प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की खड्गासन मुद्रा में है । प्रतिमा निर्माण में संघस्थ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मूर्ति निर्माण कमेटी के अध्यक्ष पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के कुशल नेतृत्व में डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल–पैठण, इंजीनियर सी. आर पाटील–पुणे, जयचंद कासलीवास–चांदवाड़ आदि ने प्रशंसनीय सहयोग किया। यह प्रतिमा मांगी पर्वत के एक हिस्से में पूर्वाभिमुख निर्मित की गई है। प्रतिमा जहां विराजित है उस स्थान का नाम ऋषभगिरी रखा गया

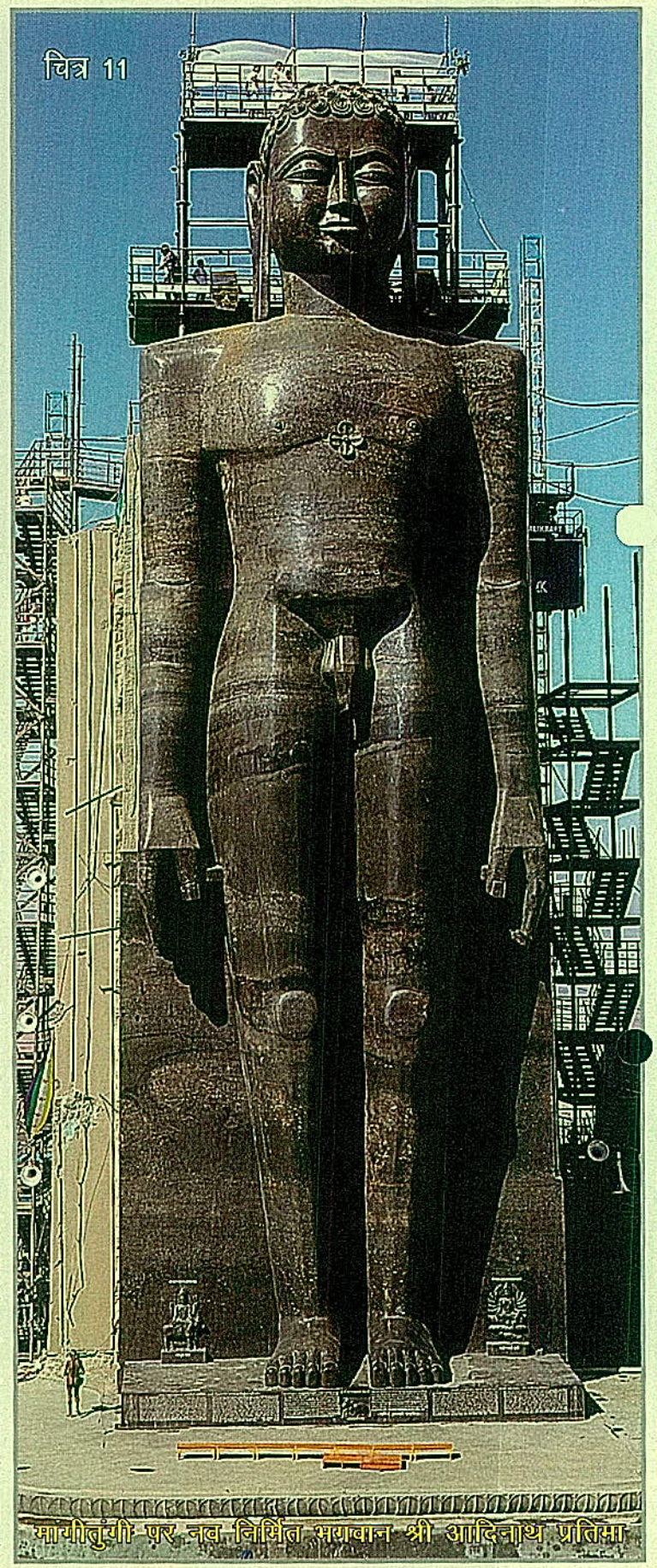

मांगीतुंगी पर नव निर्मित भगवान श्री आदिनाथ प्रतिमा

है। इस प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 11 फरवरी 2016 से 17 फरवरी 2016 तक हुआ। 18 फरवरी 2016 को इस प्रतिमा का प्रथम कलश महामस्ताभिषेक प्रारंभ हुआ। संबंधित महोत्सव में लाखों जैन श्रावक श्राविकाओं ने भाग लिया।

तलहटी के मन्दिर – तलहटी के मंदिरों के अंतर्गत 1. मुनिसुव्रतनाथ मंदिर, 2. सहस्रकूट कमल मंदिर, 3. चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर, 4. आदिनाथ मंदिर और 5. शान्तिनाथ मंदिर हैं। प्राचीन समय में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के समीप एक विशाल और संपन्न मुल्हेड़ नाम का नगर रहा है। मुल्हेड़ नगर में अनेक जिनालय और धर्मशालाएं थीं। मांगीतुंगी की यात्रा करने वाले यात्री मुल्हेड़ में ही रूकते थे और यहां की धर्मशालाओं में विश्राम करते थे। पूर्व में ईडर पट्ट के भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी ने मांगीतुंगी पर्वत की तलहटी में वि. संवत् 1870 में एक धर्मशाला का निर्माण करवाया एवं एक जिन प्रतिमा यात्रियों के दर्शन पूजन के लिए वहां विराजित करवा दी। बाद में कारंजा के भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी की प्रेरणा से मांगीतुंगी पर्वत की तलहटी में शिखर बन्द जिनालय का निर्माण करवाया गया और वि. संवत् 1915 में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजित कर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाई गई। वर्तमान में यह मंदिर चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है।

आचार्य श्री श्रेयांससागरजी की प्रेरणा से तलहटी में मुनिसुव्रतनाथजी के मंदिर का शिलान्यास सन् 1983 में हुआ। इस मंदिर की मूलनायक प्रतिमा का निर्माण स्वर्गीय हरकचंदजी सेठी के सुपुत्र श्री निर्मलकुमारजी सेठी, श्री हुलासचन्द्रजी सेठी, श्री महावीरप्रसादजी सेठी एवं श्री दिनेशकुमारजी सेठी द्वारा करवाया गया। इस प्रतिमा की ऊंचाई 21 फुट और कमल के आसन के साथ ऊंचाई 27 फुट है। श्री मुनिसुव्रतनाथजी के मंदिर के सामने से दायीं ओर सहस्रकूट कमल मंदिर है। इस मंदिर के निर्माण की प्रेरणा स्रोत ग. आ. ज्ञानमतीमाताजी हैं। श्री आदिनाथ मंदिर के सामने मानस्तंभ है। सभी मंदिर एक ही परिसर में हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पं. बलभद्र जैन : भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, चतुर्थ भाग, प्रका. भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुंबई, 1978 ई., पृष्ठ 212–13।
2. आचार्य रविषेण : पद्मपुराण (तृतीय भाग), संपा. अनु. डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2012 ई., पर्व 97 श्लोक 61–63 एवं 150, पर्व 107 श्लोक 1–18, पृष्ठ 206, 212 एवं 318–19।

कुमठा क्षेत्र का जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष द्वारा अवलोकन

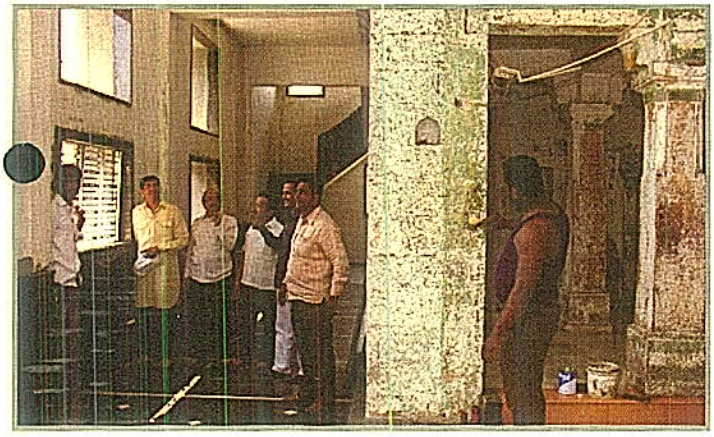

कुमठा: श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र को तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा जीर्णोद्धार हेतु सहयोग राशी प्रदान की गयी थी। इस राशी से हो रहे कार्य का अवलोकन तीर्थक्षेत्र कमेटी के जीर्णोद्धार विभाग के अध्यक्ष श्री अनिलजी जमगे, मार्गदर्शक प्रतिष्ठाचार्य डॉ. महावीर शास्त्री एवं श्री रविंद्रजी कटकेद्वारा अवलोकन किया गया। योग्य सूचनाओं के साथ मंदिर समिती को दिशानिर्देश दिये गये। मंदिर जीर्णोद्धार समिती के अध्यक्ष श्री शामजी पाटील एवं महामंत्री वालचंद पाटीलजी ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीयों का क्षेत्र विकास कार्य को अवगत कराया। उत्कृष्ट कार्य की तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सराहना की गयी।

कृति-मध्यांचल तीर्थ दर्पण

प्रधान सम्पादक-श्री अशोक जैन जैनम्

प्रकाशक-भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल

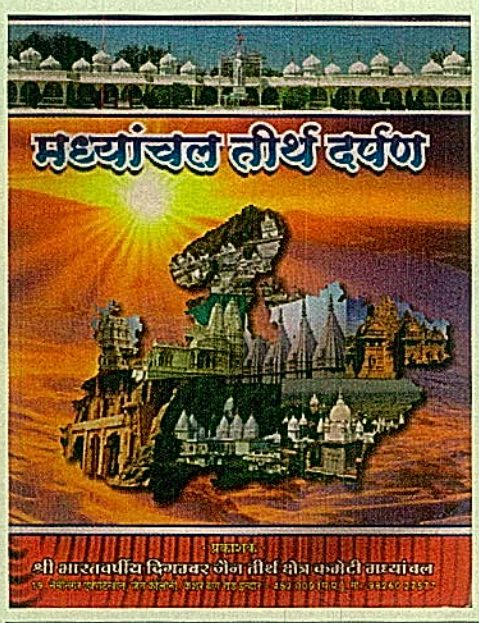

तीर्थ किसका-जो पूजे उसका उक्त लोकोक्ति का भाव यही है कि हमारे सिद्धक्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, कलाक्षेत्र आदि सदियों से जैन धर्मावलम्बियों की पूजा, भक्ति एवं आस्था के केन्द्र रहे एवं उनकी आस्था के कारण ही इन तीर्थों की अस्मिता सुरक्षित रहीं। अत्यंत प्राचीनकाल से बड़े-बड़े समूहों में श्रावक-श्राविकायें विपरीत परिस्थितियों, में आवागमन के साधनों की दुर्लभता के बावजूद भक्ति भाव से तीर्थ यात्रा कर अपने जीवन को धन्य करते रहे।

वर्तमान में आवागमन के साधनों की सरलता, क्षेत्रों पर भोजन, आवास आदि की अपेक्षाकृत अच्छी सुविधायें होने के बावजूद श्रावकगण और अच्छी सुविधाओं की अपेक्षा रखते हैं। वर्तमान जीवनशैली ही ऐसी बनती जा रही है कि लोग किंचित भी असुविधाओं में नहीं जीना चाहते एवं असुविधाओं के भय से वे तीर्थयात्रा का विचार ही स्थगित कर देते हैं। वस्तुत: अनेक तीर्थों पर आवागमन के अच्छे साधन सुलभ हो गये हैं। भोजन एवं आवास की युगानुकूल बेहतर सुविधायें उपलब्ध करा दी गई हैं किन्तु उनका सम्यक् प्रचार नहीं हो पा रहा। इस आवश्यकता की पूर्ति में निर्देशिकायें अहम् भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं। दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका-इन्दौर की 75000 प्रतियाँ 10 वर्ष में प्रकाशित होकर वितरित होना इसका सबल प्रमाण है।

भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मध्यांचल ने इस बारे में अध्यक्ष श्री विमल सोगानी जी के नेतृत्व में अच्छी पहल की है। तीर्थ निर्देशिका में जहाँ म.प्र. के 76 तीर्थों का विवरण संकलित किया गया है वहीं मध्यांचल तीर्थ दर्पण के नाम से प्रकाशित इस नई डाइरेक्टरी में अपेक्षाकृत कम प्रचलित 33 तीर्थों को मिलाकर 109 तीर्थों का विवरण दिया है। इस डाइरेक्टरी की विशेषता सम्पूर्ण पुस्तक का बहुरंगी एवं सचित्र होना है। विभिन्न तीर्थों परिचय अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत एवं जानकारीपूर्ण हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक ने इस कार्य में बहुत श्रम किया है। विभिन्न तीर्थों की जानकारी एकत्र करना अत्यंत कठिन है इसका अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है। श्रेयांसगिरि एवं भदिद्लपुर की जानकारी न प्राप्त होने की बात सम्पादक जी ने स्वयं स्वीकार की है आशा है कि अलगे संस्करण में इनका भी समावेश हो सकेगा। मेरा विनम्र सुझाव है कि प्रूफ पर कुछ अधिक ध्यान दे। जन-जन के उपयोग की ऐसी पुस्तकें जितनी निर्दोष हो अच्छा रहता है। मुद्रण एवं साज-सज्जा आकर्षक है। मूल्य उचित है। भाई विमल सोगानी जी एवं उनकी पूरी टीम को बधाई। अंचल भी इनका अनुसरण करें तो यात्रियों को सुविधा रहेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मध्यांचल के अध्यक्ष श्री विमल सोगानी जी जैन तीर्थवंदना के प्रधान संपादक डॉ.अनुपम जैन का सम्मान करते हुए

मंच पर मध्यांचल के संरक्षक श्री नवीन जैन (गाजियाबाद), सहायक आयकर आयुक्त श्री नितीन समैया, इंदौर तथा तीर्थवंदना के प्रधान संपादक डॉ.अनुपम जैन

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक-जैन तीर्थ वंदना

राष्ट्रीय और सामाजिक परिवर्तनवादी 110 वर्ष पुराना भातकुली तीर्थक्षेत्र का अधिवेशन

- प्राचार्य डॉ.गजकुमार शहा

6नवम्बर को अतिशय क्षेत्र भातकुली यहाँ आज से पहले 110 वर्षे पूर्व विदर्भ प्रांतिक दिगंबर जैन सभा का अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशनके अध्यक्ष बम्बई के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमान सेठ माणिकचंद पानाचंद जव्हेरी थे। भातकुली यह विदर्भ में जैनों का एक महत्वपूर्ण तीर्थक्षेत्र है। यह क्षेत्र अमरावती से 16. कि.मी. दुरीपर है। सौ साल पहले इस अतिशय क्षेत्रपर जाना बहुत कठिण था। क्योंकि वहाँ जाने के लिए अच्छा रास्ता नहीं था। जो रास्ता था वह पत्थर और काली मिट्टी से ओतप्रोत होने के कारण वहाँ जाने में बहुत कठीनाई थी। ऐसा होते हुअे भी अकोला निवासी जयकुमारजी चवरे इन्होंने वहाँ विदर्भ प्रांतिक सभा का अधिवेशन लेने का निश्चय किया। कुमारजी चवरे यह अकोला के जाने माने वकील थे। उनको सामाजिक और धार्मिक कारणों में रुची थी। इस अधिवेशन के मनोनीत अध्यक्ष शेठ माणिकचंद पानाचंद जवेरी और उनके साथ आये हुऐ लोगों को भातकुली क्षेत्रपर जाते वक्त बैलगाडी का उपयोग करना पडा। सब लोग बैलगाडी में बैठकर तीर्थक्षेत्र पर पहुँचे।

उनके साथ महाराष्ट्र के विविध भागों से आये हुए प्रतिष्ठित लोग थे। उनमें सोलापूर के शेठ हिराचंद नेमचंद के पुत्र श्री वालचंद शेठ और शीतल प्रसादजी, नागपूर से गुलाब साहुजी, अचलपूर से शेठ नथ्थू सावजी, अंजनगाव से सिंघई साहब, खानदेश से पारोला के शेठ पिताबरदासजी आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इस अधिवेशन के लिए केवल जैन लोगही पधारे थे। ऐसा नहीं तो अन्य जाती के लोग भी पधारे थे। उनमें लोकमान्य टिलक के सहयोगी देशभक्त ग कू. खापर्डे, बी.ए.एल.बी. डॉ. मुंजे, दुराणे वकील आदि लोगों का भी आगमन हुआ था। इस अधिवेशन का वैशिष्टय यह था की लगभग 110 साल पहले इस अधिवेशन के लिए लगभग पाच हजार लोग इकट्ठे हुऐ थे। ऐसा कहा जाता है की, इसके पहले विदर्भ में इस काम के लिए इतना बड़ा समुदाय पहले कभी भी इकठ्ठा नहीं हुआ था। इस भीड को देखकर ऐसा लगता था की महिलाये और पुरुषों का बड़ा सागर ही इकठ्ठा हुआ है।

अधिवेशन का प्रारंभ:-

6 नवम्बर 1906 के दिन सबेरे इस अधिवेशन का प्रारंभ हुआ। इस वक्त सभा के अध्यक्ष शेठ माणिकचंद जव्हेरी इनका बड़ा स्फूर्तीप्रसाद भाषण हुआ। अपने भाषण में उन्होंने कहा की, जैन समाज आज निद्रिस्त अवस्था में है। इस समाज को जगाने को जगाने का काम हमें करना है और यह कार्य दिगंबर जैन सभा सातत्य से कर रही है। विदर्भ के सभा संस्थापक अध्यक्ष शेठ गुलाब साहू इन्होंने पचास हजार रुपये देकर एक ट्रस्ट की स्थापना की है। उसके लिए उन्होंने एक समिति नियुक्त की है। यह समिति इस राशि के उपर आनेवाले व्याज से तीर्थ सुधारणा, शिक्षण, जैन पाठशाला, जैन बोर्डिंग आदि संस्था को आर्थिक मदत करनेवाली है। जैन समाज की प्रगति उच्च शिक्षण द्वारा ही होनेवाली है। समाज के अंदर शिक्षण को बढावा देने के लिए हर जगह बोर्डिंग की स्थापना होना आवश्यक है। जैनों ने हर जगह औद्योगिक प्रगती के लिए कारखाने निकालना चाहिए। कारखाने से हमारे देश में आद्यौगिक प्रगति होगी, उससे व्यापार बढेगा। व्यापार बढने से देश और समाज आगे बढेगा उसमें समृद्धी आयेगी।

स्त्री शक्ती को वढावा देने का आवाहन-

इस अधिवेशन वैशिष्टय यह था की इस सभा के अध्यक्ष श्री माणिकचंद जवेरी इनको नारी शक्ती का अंदाज लग गया था। नारी यह हमारे समाज की एक बड़ी ताकद है। इसलिए उसका उपयोग समाज को आगे बढाने के लिए बहुत लाभप्रद होगा ऐसा उनको लगता था। इसलिए उन्होंने अपने उदघाटन भाषण में कहा की, जैन समाज ने नारी के शिक्षण के तरफ ध्यान देना चाहिए। उनके पढाई का बंदोबस्त करना चाहिए क्योंकि हमारी नारी माता किसान के समान कार्य करती है। बचपन में वह बालक के उपर उत्तम संस्कार करती है। किसान जिस प्रकार खेती में बीज बोता है उस प्रकार वह बालक के उपर उत्तम संस्कार करती है। किसान जिस प्रकार खेती में बीज बोता है उस प्रकार वह बालक के मन में उत्तम संस्कार का बीज बोती है। आगे बिज से तयार होने वाले पौधे का किसान जिस प्रकार संरक्षण करता है उसी प्रकार माता बढते हुऐ बालक का संरक्षण करती है। वह उसे लिखना, पढना, अभिषेक करना, सप्त व्यसनों से दूर रखना आदि काम करती है। इस क्रिया से कुंटुंब में सुसंस्कारित बालक तयार होते है। अच्छा समाज निर्माण होता है। यह सब होने के लिए नारी वर्ग को शिक्षण देने की बहुत जरुरत है। आप यह ध्यान में रखो की स्त्री एक बड़ी शक्ती है। उसमें समाज को बदलने की ताकद है। इसलिए उसे शिक्षित करना हमारा कर्तव्य है।

ग्रंथो की निर्मिती की आवश्यक:-

उद्घाटन के भाषण में शेठजी ने आगे कहा की, नया मंदिर बनवाने के जगह पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार किया जाय। यदि धर्म को आगे बढाना होगा तो उसके लिए ग्रंथो की निर्मिती करना चाहिए। यह ग्रंथ हमें नैतिकता की ओर ले जायेंगे। उससे जैन अहिंसा तत्व का प्राचार होगा। शाकाहार लोगों में बढेगा। एक अंग्रज ने मांस भक्षण से शरीर के उपर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है इस के बारे में एक ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में लिखा है। इस ग्रंथ का उर्दू भाषा में अनुवाद करने को अलिगढ के मुसलमान विद्यार्थियों को हमने कहा। उसके लिए कुछ रुपये बक्षीस देने की योजना की। बहुत से विद्यार्थियों ने इस स्पर्धा में भाग लिया/स्पर्धा के माध्यम से हमें उनके अनुवादित ग्रंथ मिले। उसमें से अच्छे ग्यारह विद्यार्थियों को हमने 75 रुपयों का बक्षीस दिया। बम्बई के

इस्लामिया हायस्कूल के सेक्रेटरी ने इस ग्रंथ का अनुदान पढा और उसने क्रमश: मांसाहार बंद करने का निर्णय लिया है। इस पर से आप ग्रंथो का महत्व सकेंगे।

महिला अधिवेशन-

अधिवेशन के दूसरे दिन याने 7 नवम्बर को भातकुली तीर्थक्षेत्र के प्रांगण में महिलाओं का विशेष अधिवेशन बुलाया गया था। जैन नारीयों की प्रगति होनी चाहिए। जैन स्त्री हर जगह आगे बढनी चाहिए, उसकी हर क्षेत्र में प्रगति होनी चाहिए इस उद्देश से महिला अधिवेशन का आयोजन किया गया था। इस अधिवेशन का वैशिष्टय यह था की, इस अधिवेशन को उस जमाने में ढाई हजार महिलाएँ उपस्थित थी। इस उपस्थिती के बारे में ऐसा कहा जाता है की, सारी विदर्भ की जैन महिलाएँ इस अधिवेशन में उमडी थी। इतना बड़ा समुदाय इसके पहले कभी इकठ्ठा नहीं हुआ था। यह भातकुली के अधिवेशन आगे जाकर सिद्ध किया। इस महिला अधिवेशन की अध्यक्षा सौ. गुंजाबाई यह थी, तो प्रमुख वक्ता श्रीमती मगनबाई यह थी। उन्होंने प्रमुख वक्ता इस नाते से नारी का कर्तव्य इस विषय पर बड़ा रोचक भाषण दिया। नारी के कौन से कर्तव्य होते है इस पर उन्होंने प्रकाश डालकर जैन नारी को अपने कर्तव्य निभाने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीय आंदोलन और भातकुली

इस अधिवेशन का वैशिष्टय यह था कि वह केवल धार्मिक अधिवेशन नहीं था। उसको राष्ट्रीय आंदोलन की भी किनार थी। अपना देश ब्रिटिशों के गुलामगिरी में नहीं रहना चाहिए यह जैन समाज की धारणा थी। ब्रिटिशों को यहाँ से भगाना चाहिए ऐसी जैन समाज की ठोस भावना थी। इस हेतु जैनीयों ने इस अधिवेशन में विदर्भ के देशभक्त दादासाहेब खापर्डे और डॉ. मुंजे इनको इस सभा में आमंत्रित किया था। उन्होंने भी इस समुदाय में उपस्थित होकर जनसमुदाय के सामने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगो को आवाहन किया कि, आप सब लोगों ने स्वदेशी वस्तु का घर में उपयोग करना चाहिए। परदेशी वस्तुपर बहिष्कार डाले। स्वदेशी वस्तु का उपयोग याने देश की सेवा और बिटिशों के पारतंत्र्य से छुटने का एक नया मार्ग। यहां उपस्थित लोगों ने इस बारे में सोचना चाहिए। देशभक्त दादासाहेब खापर्डे और डॉ. मुंजे उनके आवाहन को तत्काल वहाँ उपस्थित श्रावकों ने प्रतिसाद दिया। बहुत से श्रावकों ने मॉरिशस शक्कर न खाने का व्रत लिया। क्योंकि यह शक्कर बाहर के देश से आती थी और उसे सफेद करने के लिए हड्डियों का उपयोग किया जाता था। कुछ श्राविकों ने चर्म के चप्पल न पहनने की प्रतिज्ञा की, तो कुछ श्रावक बंधुने खादी का वस्त्र पहनने की शपथ ली। इस प्रकार लोकमान्य तिलक ने देश को जो चतु:सुत्री का कार्यक्रम दिया था उसमें भातकुली में उपस्थित जैन श्रावकों ने हाथ बटाया। उसमें सामील होकर जैन समाज ने यहाँ धर्म भक्ती के साथ राष्ट्रभक्ती का ही परिचय दिया। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभिक काल में उस आंदोलन में सामील होना यह जैन समाज की बड़ी सुझ बुझ थी। उससे राष्ट्रीय आंदोलन आगे बढता गया। मगर उसकी नींव मजबूत करने में जैन समाज का बड़ा योगदान रहा यह भारत के लोगों ने भूलना नहीं चाहिए।

रत्नत्रय अधिवेशन-

भातकुली तीर्थक्षेत्र के मूल नायक भ. आदिनाथ है। वहाँ उनकी भव्य और मनोज्ञ प्राचीन प्रतिमा है। ऐसा कहा जाता है की, इस सृष्टी में मानव को जिने की कला भगवान आदिनाथ ने शिकायी। कल्पवृक्ष के विनाश के बाद पंचम काल के लोगों के उनके उपजिविका के लिए भ. आदिनाथ ने उन... असि-मसि, कृषी आदि बाते पढाई। उसके बाद बहुत समय बीत गया। बहुतसा जल बह गया। समाज में निद्रिवस्था आ गयी। श्रावकों के आचरण में शिथिलता आ गयी। मुझे लगता है की यह श्रावकों के आचरण में आई हुई शिथिलता और समाज की निद्रावस्था दूर करने के लिए भ. आदिनाथ की प्रतिमा भातकुली में अवतीर्ण हुई। मूर्ती के प्रतीक में भ. आदिनाथ भातकुली के भूमी पर प्रकट हूये। इंद्रादि देवों ने इस भूमी पर उनके समवशरण की रचना की। यह अधिवेशन द्वारा भ. आदिनाथ ने हमें नया मार्ग बताया। समाज को नयी दिशा दी। उन्होंने समाज को आज्ञा दी की, नारी का सन्मान करो। उसे एक शक्तीरुपी देवी के समान मानो। ऐसा करने से सामाजिक परिवर्तन होगा। नया मंदिर बनाने के पहले प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार करो। ग्रंथ हमारे गुरु है ऐसा समझकर उनका स्वाध्याय करे। नये ग्रंथ की निर्मिती करे, क्योंकि ग्रंथ ही ज्ञान के भण्डार है। धर्म प्रचार का वह महत्वपूर्ण साधन है। शैक्षणिक विकास के लिए बोर्डिंग की जरुरत है। इसलिए नये बोर्डींग बनाने चाहिए। को आझाद करने के लिए स्वदेशी वस्तू का उपयोग बढाना चाहिए। इस सब बातों पर इस अधिवेशन में चर्चा हुई। उस पर विचार किया गया। इसलिए मुझे ऐसा लगता है की यह अधिवेशन सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने वाला जैन रत्नत्रय स्वरूप अधिवेशन था।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

76-yr-old Jain scholar attains samadhi after observing M-day Santhara

Chennai: J Appandirajan, who had been observing Santhara (Sallekhana), a Jain ritual in which an individual fasts unto death, attained samadhi at Upm on Sunday after completing 14 days at the Visakacharya Thapo Ni- layam near Vandavasi in Ti-ruvannamalai. As the final : moments approached, the reclining 76-year-old wanted : himself on a sitting posture, as it is considered the most j ideal form one could achieve : during Santhara.

A prominent Jain scholar and author of more than 76 books, Appandirajan first : gave up food and gradually I reduced the intake of water ; after observing Santhara on; November 20. Apparently he was conscious till the end a rare achievement during the Santhara. "An hour before he attained samadhi, he wanted us to make him sit. He was conscious and was aware of what's happening. Watching him attaining samadhi was a great feeling," said K Ajitha Doss, a Jain scholar.

Jains believe that observing the ritual provides a person an alternative, nonviolent approach to the ultimate rite of passage. Santhara is a highly respected practice in Jainism, one the community believes leads an individual to a world of nonviolence after rejecting all desires in the material world.

After the samadhi, the body was taken out on a procession. "Not many these days attain samadhi after observing santhara. Only those who have strong faith in Jainism can do that," said Ajitha Doss. The body in sitting posture was burned using coconut and sandalwood in the pyre.

Born at Vangaram village in Tiruvannamalai in 1942, Appandirajan retired as headmaster from a government-aided school in Vandavasi after 36 years of service. He organised literary conferences, debates and created an organisation called Thirukkural Peravai'. He also started the Ilan- go Adigal literary academy in the name of the Jain ascetic who authored the epic. 'Silpadhikaranam. "He is a scholar of Jain literature He has

contributed immensely to literature by translating many books into Tamil, namely 'Tattvartha Sutra', 'Samaya Saram' and 'Rathna Saram'. He has written a commentary on Tamil epic Thirthankar Kavya' and published biographies of Jain Tirthankaras," said Ajitha Doss.

Ascetics in the past took the santhara vow, now rare in Tamil Nadu. Inscriptions in Tamil Brahmi, dating to the 5th century AD, found at Tirunatharkundru in Villupuram, record the death of ascetic Chandranandhi, who undertook santhara and fasted for 57 days till his death. A 10th century AD inscription on a hillock in the same place records the death of Ilayapa- radarar, who fasted for 30 days. The Jain community in Tamil Nadu had welcomed the decision of the Supreme Court in September 2015 staying a Rajasthan high court order banning the community from practising Santhara. Marudevi Ammal, an 83 year-old woman in Tiruvannamalai, attained samadhi after observing Sal lekhana for 42 days in 2015; it was the first santtiarareported after a decade in TN.

Times of India Dt 16/12/16

जैन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने वाली विभिन्न राष्ट्रीय संस्थायें

- संकलन, हंसमुख गांधी, इंदौर

1. B.L. Jain Charitable Trust 151, Kanchanbagh, Indore, www.bljaincharitabletrust.org
2. Shrimati Usha Jain - President: 9810537304 Sewaram Jain Charitable Trust, B-54, First Floor, East Jyoti Nagar, Shahdara - Delhi - 110093
3. Scholarship - Jaina USA - Mumbai Virchand Raghavji Gandhi Scholarship, Mumbai, 9324242324
4. Shree Ratanlal Kanwarlal Patni Foundation C/o R.K. Marble Pvt. Ltd. - 01463-260101, Makarana Road, Madanganj, Kishangarh - 305801, Distt. Ajmer Rai rkfoundation@rkmarble.com
5. JITO Education Loan Programme 5, Second Floor, 7/10 Botawala Building, Harniman Circle, Fort Mumbai - 400023, 022-66102003/2004, www.jito.org
6. Dharmveer Jain Aman Charitable Trust A-377, Indira Nagar Lucknow - 226061 9336617281 / 0522-2310815 / 94522 92586
7. Sarswati Devi Jain Smrati Chatrawrati AAA 363, Vijay Nagar, A.B. Road, Indore
8. Adarsh Jain Smrati Chatrawrati Kosh, C/o D.C. Jain, Indore
9. M.C. Jain Memorial Scholarship, Palasia, Indore
10. Aap Samaj C/o Indarkumar Sethi, Indore, 9303243347
11. Samosharan Chatrawarti Kosh for Girls, 0731-2516770
12. Secretary Sahu Jain Trust, C/o Times House, 7 Bahadur Shah Jafar Marg, New Delhi - 110002 www.sahujaintrust.timesofindia.com
13. Jain Engineers Society, 144, Kanchanbag, Indore, 9826075098, www.registrations.scholarships.gov.in
14. www.jainminoritycell.org
15. www.pramanik.gunayatan.org
16. pramanik.gunayatan.org
17. जैन शिक्षा समृद्धि www.jainshiksha.org
18. पदमचंद छाबड़ा - Email: spenterprises@vsnl.com

पुरा विरासत की अनुपम धरोहर है सीरोंन जी मडावरा

मध्य पाषाण कालीन मूर्ति कला का है केंद्र
खेत खलिहान व नींव की खुदाई में मिली खंडित मूर्तियां

तीर्थस्थल सीरोंन जी मडावरा में एक संग्रहालय बना हुआ है जिसमें इन खंडित मूर्तियों को सुरक्षित रखा गया है। तीर्थक्षेत्र की जानकारी देते हुए अध्यक्ष डा० राकेश जैन सिंघई ने बताया कि १९ दिसम्बर १९९९ को जैन तीर्थक्षेत्र की नींव रखी गयी थी यहां पर सहस्त्रों वर्ष प्राचीन मूर्तियों का संरक्षण करके उन्हें रखा गया है, तीर्थक्षेत्र की नींव आचार्य श्री वि सागर जी महाराज ने रखवायी थी जो आज भी संरक्षित है, क्षेत्र पर एक विशाल संग्रहालय बना हुआ है जिसमें

विश्व धरोहर सप्ताह का आगाज शुरु हो गया है । जनपद ललितपुर का नाम सम्पूर्ण भारत देश में प्रसिद्ध है वह है तीर्थक्षेत्र देवगढ से, जनपद के किसी न किसी क्षेत्र में प्राचीन धरोहर है। ललितपुर जनपद में प्राकृतिक धरोहरें सबसे ज्यादा हैं, जिन्हें संरक्षित रखने की महती आवश्यकता है, जनपद का सुदूर अंचल में बसा हुआ तहसील मडावरा यहां से आठ किलोमीटर की दूरी पर अपनी अनोखी छटा को बिखेरे हुए ग्राम सींरोन में जैन तीर्थक्षेत्र सींरोंन जी, जहां पर हजारों वर्ष प्राचीन खंडित मूर्तियां हैं। गांव में कुंआं, तालाब या खेत, बावड़ी में खुदाई करने पर खंडित मूर्तियां निकलती हैं जिनमें जैन तीर्थंकरों, हिन्दू देवी व देवताओं की मूर्तियों का मिलना एक अतुलनीय बात है। गांव में ही कुशवाहा परिवार ने अपनी खेती की जमीन का एक हिस्सा दान में देकर इस धरोहर को सुरक्षित रखा है। भगवान ऋषभदेव दिगम्बर जैन पुरातन धरोहर को सुरक्षित रखा गया है। सीरोंन निवासी शिक्षक पुष्पेंद्र जैन ने बताया कि तीर्थस्थल पर एक विशाल धर्मशाला का भी निर्माण है। गांव के निर्धन परिवारों के बच्चों को पढ़ने के लिए एक आठवीं तक विद्यालय संचालित है लेकिन बाहर से आने वाले तीर्थयात्रियों को पहुंचने का मार्ग इतना खराब है कि कोई भी यहां पहुंच नहीं सकता है। यह तीर्थ अपनी गरिमा को गौरवान्वित नहीं कर पा रहा है। कोषाध्यक्ष नीलेश जैन व बंटी बजाज का कहना है कि यदि प्रशासनिक स्तर से यहां आवागमन के मार्ग को बनवा दिया जाए तो यहां यात्री भी आयेंगें व क्षेत्र का भी विकास होगा। यह तीर्थक्षेत्र अपनी एक अनोखी छटा बिखेरेगा। आज की महती आवश्यकता है हमें अपनी पुरा संपदा के संरक्षण की, हमारी धरोहर सुरक्षित रहेगी तो हम भी सुरक्षित रहेंगें ।

ग्वालियर नगर में स्थित जैन तीर्थ : गोपाचल पर्वत

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कालोनी, भोपाल 462003
मोबाईल 94250 10111

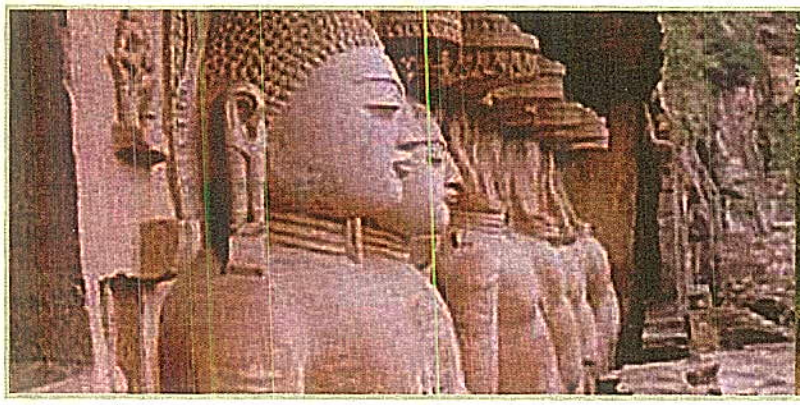

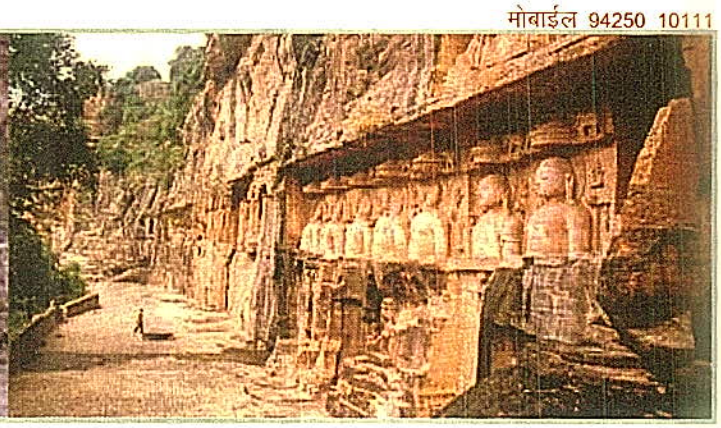

तोमर वंशीय राजा वीरमदेव, डूंगर सिंह एवं कीर्ति सिंह के शासनकाल में ग्वालियर नगर में स्थित गोपाचल पर्वत पर तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रवी शताब्दि में अनेक जैन मूर्तियों का निर्माण किया गया था। सम्राट बाबर ने सोलहवीं शताब्दि में इन मूर्तियों को नष्ट करने का आदेश दिया किन्तु भगवान पार्श्वनाथ की पदमासन मूर्ति पर प्रहार करते ही हुए चमत्कार से विध्वंषक डर कर भाग गए। यह 42 फुट ऊँची और 30 फीट चौड़ी विशाल मूर्ति अनेक अतिशयों से ओतप्रोत है। यह तीर्थ जैन समाज के लिए श्रद्धा का केन्द्र है।

गोपाचल पर्वत भगवान सुप्रतिष्ठित केवली का निर्वाण स्थल है। भगवान पार्श्वनाथ अहिच्छेत्र से नैनागिरि जाते समय इस पर्वत पर रूके थे और उन्होंने अपनी देशना दी थी। गोपाचल पर अनेक वर्षो तक भट्टारक की पीठ स्थापित रही है। गोपाचल दुर्ग के चारो ओर सहस्त्रों जैन मूर्तियॉ उपलब्ध है। कुरवाई दरवाजे से दुर्ग तक जाने के मार्ग में पाषाणों को तराशकर विशाल खड़गासान एवं पद्मासन मूर्तियॉ बनाई गई है। इनमें भगवान आदिनाथ की मूर्ति सबसे बड़ी है। यहॉ पर्वत पर 26 विशाल मूर्तियॉ और त्रिकाल चौबीसी है तथा तलहटी में नव निर्मित दो जिनालय है। श्री अजीत बरैया और उनके साथियों के समर्पण पूर्वक कठिन परिश्रम से वन विभाग से 12 हेक्टेयर भूमि न्यास को प्राप्त हो चुकी है। पर्वत पर पहुँचने के लिए सीढ़ियों और रेलिंग का निर्माण किया जा चुका है। मूर्तियों के सामने पर्वत पर फर्शी लगा दी गई है। प्रकाश व्यवस्था की गई है। तीर्थ की सुरक्षा की दृष्टि से पक्की दीवाल बनाई जा चुकी है। बड़े स्तर पर वृक्षरोपण कर हरियाली विकसित की गई है। इस पर्वत का संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य प्रगति पर है।

इस क्षेत्र पर पधारें श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री सुन्दरलाल पटवा, स्व. कुशाभाऊ ठाकरे, स्व. डालचन्द्र जैन, स्व. श्री शीतला सहाय, स्व. पूनमचन्द्र सेठी, श्री मंत यशोधरा राजे सिंधिया, श्री अजय शंकर, महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व संरक्षण, श्री अनूप मिश्रा, विधायक, श्री बाबूलाल जैन, विधायक ने विजिटर्स बुक में अंकित अपने विचारों में इस तीर्थ के संरक्षण, चतुर्मुखी विकास और सौन्दर्यीकरण की आवश्यकता बताई है। जैन संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. सागरमल जैन, शाजापुर ने उल्लेख किया है कि प्राचीन जैन कला की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुरातत्व की दृष्टि से इस तीर्थ का संरक्षण एवं विकास आवश्यक है। गुफाओं में पक्षियों एवं कीड़ो के आवास, पानी के रिसाव, मूर्तियों के समीप उगे पौधों के कारण मूर्तियों की जैविक क्षरण से प्रभावी ढंग से संरक्षण आवश्यक है। श्री अजीत बरैया के विशेष प्रयासों से भारत सरकार के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने इस तीर्थ के विकास के लिए पूरा सहयोग प्रदान किया है।

श्री रामजीत जैन, एडवोकेट द्वारा सन् 1987 में लिखित गोपाचल सिद्धक्षेत्र तथा वर्ष 1996 में लिखित ग्वालियर गौरव गोपाचल के माध्यम से तथा श्री अजीत बरैया के व्यक्तिगत प्रयासों से इस क्षेत्र का प्रचार, प्रसार और विकास हुआ है। श्री बरैया के प्रभावी नेतृत्व में इस पथरीली पहाड़ी पर गत 20 वर्षो में लगाये गये 2500 से अधिक पौधें अब वृक्ष बन गए है। श्री बरैया ने इस पहाड़ी हो हरीतिमा की चुनरी भेंट कर दी है। उनके दो–तीन दशक के प्रयास अब सफल हो रहे है। अब स्थानीय व्यक्ति भी प्रातः और सायंकाल इस तीर्थ पर दर्शन और भ्रमण के लिए नियमित रूप से पहुँचते है। नगर के बीचो बीच विकसित इस तीर्थ की हरियाली स्वस्थ हृदय की भॉति ग्वालियर पूरे नगर को ऑक्सीजन प्रदान कर रही है। देश के सुप्रसिद्ध आचार्य ज्ञानसागर जी से विनम्र प्रार्थना है कि वे इस तीर्थ के विकास में अपना योगदान दें। आचार्यो और मुनियों से विनम्र प्रार्थना है कि वे इस सात सौ वर्ष प्राचीन तीर्थ की ओर ध्यान दें। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती सरिता जी और महामंत्री श्री संतोष पेढ़ारी से विनम्र आग्रह है कि वे इस अप्रतिम और अनूठी धरोहर के संरक्षण और विकास के लिए ठोस प्रयास करे और श्री वरैया का उनके असाधारण अवदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान करें।